Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُطوَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ○

(सूरः इब्राहीम आयत : 39)

अनुवाद: "हे हमारे रब! निश्चित ही तू जानता है जो हम छिपाते हैं और जो हम ज़ाहिर करते हैं। और निश्चित ही अल्लाह से न तो ज़मीन में कुछ छिप सकता है और न ही आसमान में।"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 9
अंक - 40-41

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

06 रबी उल् सानी , 1446 हिज्री कमरी, 10 ईखा 1403 हिज्री शम्सी, 03-10 अक्टूबर 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

कर्ज़ की बेहतरीन तरीक़े से अदायगी की तालीम

हदीस {2609} : हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक ऊंट कर्ज़ लिया था। फिर ऊंट वाला आपके पास आया और कर्ज़ का तकाज़ा करने लगा। सहाबा ने उससे (सख़्ती से) बात की, तब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "हक़दार (मालिक) कहा ही करता है।" फिर आपने उसे उसके ऊंट की उम्र से बड़ा ऊंट दिया और फ़रमाया: "तुम में सबसे बेहतरीन वह हैं जो कर्ज़ को ख़ूबी से अदा करें।"

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सहाबा से मोहब्बत और उनके साथ हुस्न-ए-सुलूक

{2610} : हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ एक सफ़र में थे और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ऊंट पर सवार थे, जो बहुत तेज़ चल रहा था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से आगे निकल जाता था। उनके वालिद (हज़रत उमर) ने कहा : "अब्दुल्लाह! नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कोई आगे न बढ़े।" तब नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: "मुझे यह बेच दो।" हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: "ये तो आपका ही है।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे ख़रीद लिया और फिर फ़रमाया: "अब्दुल्लाह! अब यह तुम्हारा ही है, इससे जो चाहो काम लो।"

(सहीह बुख़ारी, जिल्द 4, किताब-उल-हिबा)

★ ★ ★

सहाबा का रंग अपनाने की तालीम

तुम जो ख़ुद को मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत कहला कर सहाबा की जमाअत से मिलने की ख़्वाहिश रखते हो, अपने अंदर सहाबा का रंग पैदा करो। अगर मैं ख़ुदा की तरफ़ से न होता, तो बताओ कि इतनी गालियाँ, इतना शोर और इतना इज़्तिराब अपने ऊपर लेने की किसे ज़रूरत हो सकती है?

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शक्ल और सूरत जिस पर खुदा पर भरोसा करने का नूर चढ़ा हुआ था और जो जलाली और जमाली रंगों से भरपूर था, उसमें एक ऐसी कशिश और ताक़त थी कि दिल ख़ुद-ब-ख़ुद खिंच जाते थे। फिर आपकी जमाअत ने ऐसी आज्ञापालन (इत्तेबा-ए-रसूल) का उदाहरण दिखाया कि उनकी इस्तिक़ामत (दृढ़ता) इतनी ज़्यादा साबित हुई कि जो भी उन्हें देखता था, उसकी तरफ़ खिंचा चला आता था। आज भी सहाबा जैसी हालत और एकता की ज़रूरत है, क्योंकि अल्लाह ने मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को उसी जमाअत से जोड़ दिया है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तैयार की थी। जमाअत की तरक़्क़ी ऐसे ही लोगों के नमूनों से होती है, इसलिए तुम जो मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होकर सहाबा की जमाअत से मिलने की ख्वाहिश रखते हो, अपने अंदर सहाबा जैसा रंग पैदा करो। तुम्हारी आज्ञापालन वैसी ही हो, आपस में मोहब्बत और भाईचारा वैसा ही हो। हर तौर-तरीके और हर हालत में तुम्हें वही सूरत अपनानी चाहिए जो सहाबा की थी। जो लोग हमारे मुख़ालिफ़ होकर हमें गालियाँ देते हैं और हमें दज्जाल और काफ़िर कहते हैं, हम इसकी बिल्कुल परवाह नहीं करते क्योंकि अल्लाह ने हर इंसान को एक नूर-ए-फितरत और फ़ैसले की ताक़त अता की है। जिस तरह इंसान अपने शरीर से निकलने वाली गंदगी की बदबू को महसूस करता है, उसी तरह झूठ, जो इस गंदगी से भी ज़्यादा बदबूदार है, उसे झूठ बोलने वाला ज़रूर महसूस करता है। इसलिए मैं नहीं समझ सकता कि एक झूठा शख़्स इतनी ताक़त और

शेष पृष्ठ 07 पर

जो व्यक्ति क़ुरबानी करता है, वह इस बात का इज़हार करता है कि मैं ख़ुदा की राह में सब कुछ क़ुरबान कर दूंगा।

जो व्यक्ति बकरे की क़ुरबानी के साथ-साथ अपने नफ़्स (स्वयं) की भी क़ुरबानी करता है, वह शरीफ़ों के बीच क़ाबिले-ए-इहतराम (सम्मानित) होता है। लेकिन जो व्यक्ति केवल बकरे की क़ुरबानी पर ही संतुष्ट हो जाता है, वह नकलची और तमाशा करने वाला है और इस कारण किसी इज़्ज़त का हक़दार नहीं होता।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः अल् हज की आयत नंबर 38 की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : याद रखो, क़ुरबानी का उद्देश्य यह नहीं है कि उसका गोश्त या ख़ून ख़ुदा तक पहुँचता है, बल्कि इसकी हिकमत यह है कि इसके माध्यम से तक़वा (धार्मिकता) पैदा होती है, और यह तक़वा ही ख़ुदा को पसंद है। कुछ लोग ऐतिराज़ करते हैं कि क्या ख़ुदा, अल्लाह न करे, हिंदुओं के देवताओं की तरह ख़ून का प्यासा और गोश्त का भूखा है कि वह जानवरों की क़ुरबानी का हुक्म देता है और उनकी जान की क़ुरबानी को क़बूल करता है और क़ुरबानी करने वालों को जन्नत की बशारत देता है। इसका जवाब अल्लाह ने इस आयत में दिया है कि क़ुरबानी का मक़सद यह नहीं है कि उसका गोश्त या ख़ून अल्लाह को पहुँचता है, बल्कि इसका असल मक़सद यह है कि इसके द्वारा इंसान के दिल में तक़वा पैदा हो और वह तक़वा अल्लाह को पसंद है।

कुछ लोग बकरे, ऊँट या गाय की क़ुरबानी करके समझ लेते हैं कि उन्होंने ख़ुदा को पा लिया, लेकिन यह ग़लतफ़हमी है। अल्लाह साफ़ तौर पर फ़रमाता है कि यह कोई बड़ी बात नहीं कि तुमने जानवर ज़बह किया और खुद खा लिया। इसका मतलब यह नहीं कि ख़ुदा को कुछ मिला। यह तो बस एक प्रतीकात्मक भाषा है जो एक हक़ीक़त का इज़हार करती है, जिसमें गहरी हिकमत छिपी है। जैसे कोई चित्रकार तस्वीरें बनाता है, लेकिन उसकी मंशा सिर्फ़ तस्वीर बनाना नहीं होती, बल्कि उसके ज़रिए वह समाज के सामने अहम मुद्दे रखना चाहता है। कभी वह ज़ंजीर की तस्वीर बनाता है जिसका मतलब क़ौमी एकता होता है और कभी सूर्योदय का नज़ारा दिखाता है जिसका मतलब क़ौमी तरक़्क़ी होता है।

शेष पृष्ठ 07 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

हर वह व्यक्ति जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में शामिल हुआ है, वो तभी आपकी बैअत के मक़सद को पूरा करने वाला होगा जब वह अपने तक़वा (संयम) के मियार (स्तर) को बढ़ाएगा।

अल्हम्दुलिल्लाह, आज जलसा सालाना जर्मनी शुरू हो रहा है। ... अल्लाह तआला जलसे और समस्त इंतेज़ामात को हर लिहाज़ से बाबरकत बनाए और लोगों को समस्त प्रोग्रामों से भरपूर फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।
कारकुनान (कार्यकर्ता) इस जज़्बे से काम करें कि हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बुलाने पर आए हुए मेहमानों की ख़िदमत करनी है, और चाहे हालात कैसे भी हों, हमें अपने अख़लाक़ (चरित्र) के मियार को ऊंचा रखना है और ख़िदमत करते रहना है।

अगर ख़ुदा तआला की रज़ा (संतुष्टि) हासिल करने की कोशिश नहीं हो रही, अगर तक़वा में तरक़्क़ी (उन्नति) करने की कोशिश नहीं हो रही, अगर अख़लाक़ के आला नमूने (उच्च उदाहरण) पेश करने की कोशिश नहीं हो रही, अगर बंदों के हुक़ूक़ (अधिकार) अदा नहीं हो रहे तो फिर जलसे पर आने का मक़सद ही पूरा नहीं होता और इसका कोई फ़ायदा नहीं।

अगर आपका ख़ुदा तआला से तअल्लुक़ (संबंध) नहीं बना, अगर आपके अख़लाक़ी और रूहानी (आध्यात्मिक) हालात में बेहतरी नहीं आई, तो ऐसे शिरकत करने वालों से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नाराज़गी का इज़हार किया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत में उसी को शुमार (गिना) किया है जिसमें हक़ीक़ी तक़वा और पाकीज़गी पैदा हो, और अपनी हालतों को दुरुस्त (सुधार) करते हुए अपनी नेकियों के मेयार को बढ़ाने की कोशिश करे।

आज यह अहद (संकल्प) करें कि हमने जो बैअत का अहद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बांधा है, उसे पूरा करने की हर संभव कोशिश करेंगे, और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तालीम (शिक्षा) के तहत और उनके मिशन को पूरा करते हुए ईमान को सुरैया (आकाश) से लाने के लिए अपनी भरपूर कोशिश करेंगे।

हम चाहे लाख कहते रहें कि हम अहमदी हैं, लेकिन अगर अर्श (स्वर्ग) के ख़ुदा ने हमें इस फ़ेहरिस्त (सूची) में शामिल नहीं किया तो हमारा अहमदी होने का दावा भी बेकार है।
जमाअत का हर फर्द (व्यक्ति), हर बड़ा शख़्स, दो सौ (200) बार यह दुरूद शरीफ पढ़े :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ...

और साथ ही सौ (100) बार अस्तग़फ़ार भी पढ़ें।

इसी तरह सौ (100) बार رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ का विर्द (जाप) भी करें।

यहां बहुत सी इल्मी (शैक्षिक), तरबियती (प्रशिक्षण) और रूहानी बेहतरी के लिए तक़रीरें (भाषण) होंगी। उन्हें भी ध्यान से सुनें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसे के मकासिद (उद्देश्यों) में से एक उद्देश्य यह वर्णन फ़रमाया है कि जमा होने वाले आपस में तार्रुफ़ (परिचय) बढ़ाएं, अर्थात आपस में मोहब्बत और प्यार को बढ़ाएं।

"इस्लाम केवल यह नहीं है कि रस्म (रिवाज) के तौर पर अपने आपको कलमा पढ़ने वाला कहला लो, बल्कि इस्लाम की हक़ीक़त यह है कि तुम्हारी रूहें ख़ुदा तआला के सामने गिर जाएं, और ख़ुदा और उसके अहकाम (आदेश), हर एक पहलू में तुम्हारी दुनिया से तुम्हें आगे हो जाएं।"
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत तभी फ़ायदा देगी जब हम दीन (धर्म) को दुनिया पर मुक़द्दम (प्राथमिकता) देंगे। केवल खोखले नारों पर निर्भर नहीं रहेंगे।

दुनिया के हालात के लिए भी बहुत दुआ करें। अपने मुल्क के लिए भी बहुत दुआ करें।

जो मैंने दुरूद शरीफ 200 बार पढ़ने, अस्तग़फ़ार 100 बार पढ़ने और رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ पढ़ने की तहरीक की है... यह केवल तीन दिनों के लिए नहीं है, बल्कि यह एक स्थायी तहरीक है। हर अहमदी को इसे हमेशा पढ़ते रहना चाहिए।

जलसा सालाना जर्मनी 2024 के मुनासिबत से जलसे के उद्देश्यों का वर्णन और कुछ दुआओं के विर्द की ख़ास तहरीक।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 23 अगस्त 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अल्हम्दुलिल्लाह, आज जलसा सालाना जर्मनी शुरू हो रहा है। इस वक्त जर्मनी की जमाअत चाहती थी कि मैं वहां जलसे में मौजूद रहूं, लेकिन इंसान के साथ उसकी शारीरिक आवश्यकताएं भी जुड़ी हुई हैं, और इसमें सेहत का मसला भी एक हिस्सा है। इसी वजह से डॉक्टर की सलाह पर आखिरी वक्त में जर्मनी का सफर रद्द करना पड़ा। यही फैसला हुआ कि एम.टी. ए. के ज़रिए ही जर्मनी जलसे के प्रोग्रामों में शामिल हुआ जाए और यहीं से जर्मनी के जलसे में मौजूद लोगों से मुख़ातिब हुआ जाए। यह भी अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से ही मुमकिन हो सकेगा। आप दुआ करें कि अल्लाह तआला तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

यह भी अल्लाह तआला का एहसान है कि इस ज़माने में उसने ऐसी इजादें (आविष्कार) पैदा कर दीं, जिनसे इस तरह का संपर्क संभव हो सका है। बहुत से लोग जो मुझसे मुलाकात करना चाहते थे, उनके लिए अल्लाह तआला किसी और वक्त में मुलाकात के इंतज़ाम करेगा। बहरहाल, इस माध्यम से कम से कम जलसे में शिरकत का साठ-सत्तर प्रतिशत हिस्सा पूरा हो जाता है। वहां के नज़ारे इंशा अल्लाह आते रहेंगे। इस वक्त भी मैं वहां बैठे हुए लोगों को देख रहा हूं।

अल्लाह तआला जलसे और समस्त इंतेज़ामात को हर तरह से बाबरकत बनाए और लोगों को समस्त प्रोग्रामों से भरपूर फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

इस बार जलसा उस इंतेज़ाम से अलग आयोजित हो रहा है, जिसका जर्मनी जमाअत को पहले से अनुभव था। पहले हॉलों में जलसा हुआ करता था, जहां बने-बनाए इंतज़ाम होते थे, और जलसा इंतेज़ामिया को भी ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती थी। लोग भी आम तौर पर बनी-बनाई सुविधाओं का लाभ लेते थे। लेकिन अब खुले स्थान पर जलसे का इंतेज़ाम होने की वजह से इंतेज़ामिया को भी कुछ मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा और शिरकत करने वालों को भी।

हालांकि इन मुश्किलों को सहन करना और जलसे के उद्देश्य को पूरा करना, दोनों ही चाहे वह इंतेज़ामिया हो या शामिल होने वाले लोग का उद्देश्य होना चाहिए।

और मुश्किलों पर परेशान या शिकवा नहीं होना चाहिए। धीरे-धीरे ये इंतेज़ाम बेहतर हो जाएंगे। ब्रिटेन में भी इसी तरह की मुश्किलें थीं और अब भी हैं, लेकिन अब इंतेज़ाम काफ़ी बेहतर हो चुके हैं। इसलिए इन दिनों में हमें समझना चाहिए कि हर मुश्किल पर हंसते-हंसते अपने उद्देश्य को प्राथमिकता देनी है।

अभी एक महीना भी नहीं हुआ कि ब्रिटेन का जलसा आयोजित हुआ था। उसमें भी जहां लोगों ने इंतेज़ामों की तारीफ की, वहीं कुछ ने खामियों की भी निशानदेही की। तो ये कमियां और कमज़ेरियां हमेशा साथ लगी रहती हैं, लेकिन इन्हें दूर करने की कोशिश इंतेज़ामिया करती है और भविष्य में भी करेगी, इंशा अल्लाह।

अगर सभी शामिल होने वाले सहयोग करें और कार्यकर्ता भी अपनी पूरी क्षमता से कोशिश करें कि हम हर तरह से इंतेज़ामों को अपनी क्षमताओं और साधनों के अनुसार बेहतर करने की कोशिश करें, तो इसमें बरकत पड़ती है।

इसके लिए मैं सभी ड्यूटी करने वाले कार्यकर्ताओं से कहना चाहता हूँ कि सबसे पहले आपका कर्तव्य है कि मेहमानों की बेहतरीन मेहमानवाज़ी के लिए पूरी तरह सेवा की भावना से काम करें। हमेशा अच्छे आचरण का प्रदर्शन करें। हर विभाग का कार्यकर्ता मुस्कराते हुए मेहमान के साथ पेश आए। दुआ करते हुए काम करें। इस भावना से काम करें कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बुलावे पर आए मेहमानों की सेवा करनी है, और चाहे कोई भी हालात हों, हमें अपने नैतिक मानकों को ऊंचा रखना है और सेवा करते रहना है।

मेहमानों को भी वह उद्देश्य सामने रखना चाहिए, जो जलसे का उद्देश्य है। जैसा कि मैंने कहा, हर तकलीफ को बर्दाश्त करते हुए इन तीन दिनों में इस उद्देश्य को पाने की कोशिश करनी है।

जलसा सालाना यूके में जो उद्देश्य मैंने वर्णन किया था, वही हमारा उद्देश्य है, और हर जगह जहां भी जलसे आयोजित होते हैं, उसी उद्देश्य को हर अहमदी के सामने रखना चाहिए।

अगर ऐसा होगा, तो हर प्रकार की कठिनाइयों को शामिल होने वाला हर व्यक्ति अल्लाह तआला की खातिर बर्दाश्त करेगा और इस तरह अल्लाह तआला की रज़ा (संतोष) हासिल करने वाला बनेगा। अल्लाह तआला हर किसी को इसकी तौफीक दे।

हमेशा याद रखें कि अल्लाह तआला के जो इनाम हमारे ऊपर हैं, उनमें से यह एक बहुत बड़ा इनाम है, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से अल्लाह तआला ने हमें अता किया है। कि हम साल में एक बार इकट्ठे होकर अपनी आत्मिक और नैतिक उन्नति के साधन जुटाएं। ऐसे कार्यक्रम बनाएं जो हमें अल्लाह तआला से करीब करने वाले और तक़वा (धर्मपरायणता) में बढ़ाने वाले हों। इन दिनों को इस इरादे और नीयत से गुज़ारें कि हमने उच्च नैतिक और एक-दूसरे के हक़ों को अदा करने के ऊंचे मानदंड स्थापित करने हैं। आपस में मुहब्बत और प्यार का रिश्ता बढ़ाना है। मनमुटाव को दूर करना है। अल्लाह तआला की रज़ा पाने की कोशिश करनी है। हर तरह की बुराई से खुद को बचाना है। और यही वे बातें हैं, जिनकी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमसे उम्मीद की है। और यही वे बातें हैं जो अल्लाह तआला को भी पसंद हैं और जिसके लिए अल्लाह तआला ने हमें इंसान बनाया है और हमें अशरफ़-उल-मख़लूक़ात (सर्वश्रेष्ठ रचना) का दर्जा दिया है।

इसलिए जलसे में शामिल होने वाले हर अहमदी को हमेशा इन बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

यदि अल्लाह तआला की रज़ा (प्रसन्नता) हासिल करने की कोशिश नहीं हो रही है, यदि तक़वा (संयम) में उन्नति करने की कोशिश नहीं हो रही है, यदि अच्छे नैतिक उदाहरण पेश करने की कोशिश नहीं हो रही है, और यदि लोगों के अधिकार अदा नहीं हो रहे हैं, तो फिर जलसे में आने का उद्देश्य पूरा नहीं होता, और इसका कोई लाभ नहीं है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआएं केवल उन्हीं के हक़ में पूरी होंगी, जो इस उद्देश्य को समझ रहे होंगे। उस मक़सद को समझ रहे होंगे जिसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसे की शुरुआत की थी। आप फ़रमाते हैं:

"मैं हरगिज़ नहीं चाहता कि हाल के कुछ पिरज़ादों की तरह केवल बाहरी धाक दिखाने के लिए अपने अनुयायियों को इकट्ठा करूं, बल्कि असली उद्देश्य, जिसके लिए मैं यह उपाय करता हूँ, लोगों की सुधार है।"

(शहादतुल्-क़ुरआन, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 6, पृष्ठ 395)

अर्थात, वह बुनियादी वजह और उद्देश्य जिसके लिए मैंने जलसे का इंतेज़ाम किया है और अल्लाह तआला से इजाज़त पाकर यह उपाय किया है, वह यह है कि मैं अल्लाह तआला की रज़ा से, अल्लाह के हुक्म से, इसे हासिल करने वाला बनूं।

इसलिए हर अहमदी को इन बातों को ध्यान में रखना चाहिए। दुनिया में हर अहमदी को आमतौर पर इन बातों का ख्याल रखना चाहिए, न कि केवल विशेषता जलसे के लिए। लेकिन विशेषता आप लोग, जो यहां जलसे में जमा हुए हैं, उन्हें विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अगर आप इन बातों को करेंगे, तो जलसे के उद्देश्य को पूरा करने वाले होंगे। और तभी आपको जलसे में आने का फायदा होगा

जब आप इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए पूरी कोशिश करेंगे।

अगर आपका अल्लाह तआला से संबंध नहीं बना, अगर आपके नैतिक और आध्यात्मिक हालात में सुधार नहीं हुआ, तो ऐसे लोगों के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नाराज़गी का इज़हार किया है।

यहां नए इंतेज़ाम के तहत अगर आप हज़ारों की संख्या में इकट्ठा भी हो जाएं, या जहां भी जलसे होते हैं, वहां लोग हज़ारों की संख्या में जमा हो जाएं, लेकिन अगर आप जलसे के उद्देश्य को हासिल नहीं करते, जो तक़वा पैदा करना है, तो फिर जलसे में आने का कोई उद्देश्य नहीं है, और जलसा आयोजित करने का भी कोई फायदा नहीं। आप फ़रमाते हैं:

"सभी सच्चे अनुयायी जो इस विनीत के तहत बेअत में दाखिल हुए हैं, यह जान लें कि बेअत करने का उद्देश्य यह है कि दुनिया की मोहब्बत ठंडी हो जाए और अपने प्यारे मौला और रसूल-ए-मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मोहब्बत दिल पर हावी हो जाए। और एक ऐसी स्थिति पैदा हो जाए जिसमें आख़िरत का सफर नफरत पैदा न करे।"

(आसमानी फ़ैसला, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 4, पृष्ठ 3)

यह कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हम पर डाली है। यह कितनी बड़ी उम्मीद है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमसे की है कि अपनी सभी मोहब्बतों पर अल्लाह तआला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मोहब्बत को हावी करें। कोई ऐसी दुनियावी मोहब्बत न हो जो इस मोहब्बत का मुकाबला कर सके। अगर यह बात हमारे दिलों में बैठ जाए, तो फिर हमारी दुनिया भी सुधर जाएगी और हमारा धर्म भी। आख़िरत भी संवर जाएगी और यह दुनिया भी।

इसलिए यह बात उन सभी शामिल होने वालों को हमेशा याद रखनी चाहिए और इन तीन दिनों में इसे बार-बार सोचते रहना चाहिए, बार-बार इसे अपने दिल और दिमाग में लाना चाहिए। अगर आप ऐसा करेंगे, तो आप समझेंगे कि आपने जलसे पर आने का उद्देश्य पा लिया है। और अगर नहीं, तो हम अल्लाह तआला की नेअमतों की कदर करने वाले नहीं होंगे।

अल्लाह तआला की हम पर यह बहुत बड़ी नेमत है कि उसने हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की तौफ़ीक़ दी है। और अगर हम, इस मानने के बाद, और आपकी बैअत में आने के बाद, उन उद्देश्यों को हासिल करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, जो कि रूहानी तरक्की (आध्यात्मिक उन्नति) और उच्च नैतिकताओं को प्राप्त करने के हैं, तो फिर हम अपनी बैअत का हक़ अदा नहीं कर रहे हैं।

इसलिए ऐसी बातें हर शामिल होने वाले के सामने होनी चाहिए। हमेशा याद रखें कि दुनियावी नेअमतें किसी अहमदी को तक़वा से दूर न करें। अल्लाह तआला की इबादत से दूर न करें। इबादतों को भुलाने वाली न हों। उच्च नैतिक मूल्यों को हमसे न छीनें। ये व्यापार और दुनियावी नेमतें, जो अल्लाह तआला ने हमें दी हैं, यहां आकर बहुत से लोगों के हालात बहुत बेहतर हो गए हैं, बल्कि सबके ही बेहतर हो गए हैं। पाकिस्तान में जो हालात थे, उसके मुकाबले आज यहां बेहतर हैं, भले ही यहां महंगाई और आर्थिक समस्याएं हैं, लेकिन फिर भी आपके हालात पाकिस्तान से आर्थिक और दुनियावी नज़रिए से कहीं बेहतर हैं।

इसलिए इस बात को हमेशा याद रखें और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें। और अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी करते हुए, उसकी मोहब्बत और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मोहब्बत को अपने दिलों में अधिक से अधिक पैदा करने की कोशिश करें, और अपने तक़वा के स्तर को बढ़ाने की कोशिश करें। यही वह उद्देश्य है जिसके लिए जलसा आयोजित किया जाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जैसा कि फ़रमाया, यह तो आप ने एक हिकमत से निकाला है। यह एक ज़रिया है, एक बहाना है ताकि जल्द से जल्द तक़वा में उन्नति हो सके। यह तो अल्लाह तआला के फज़ल से तर्बियत का एक माहौल पैदा करने की कोशिश है, वरना सिर्फ जलसे में शामिल होने से ही अपने मियार (मानक) ऊंचे नहीं हो जाते।

हर वह शख्स जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में शामिल हुआ है, उस समय आप की बैअत के उद्देश्य को पूरा करने वाला तब होगा जब वह अपने तक़वा के स्तर को बढ़ाएगा।

जब आप जलसे में शामिल हुए हैं, तो निश्चित रूप से इस नीयत से शामिल हुए होंगे और होना चाहिए कि आपने अपने तक़वा के मियार को पहले से बढ़ाना है। इसलिए हर अहमदी को इस दिशा में पूरी कोशिश करनी चाहिए कि वह इन उद्देश्यों को हासिल करने वाला हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"अल्लाह तआला ने जो इस जमाअत को बनाना चाहा है, उसका एकमात्र उद्देश्य यह है कि वह सच्ची मआरिफ़त (ज्ञान) जो दुनिया से खो गई है और सच्ची तक़वा और पाकी जो इस ज़माने में नहीं पाई जाती, उसे दोबारा कायम किया जाए।"

(मल्फ़ूज़ात, खंड 7, पृष्ठ 277-278, संस्करण 1984)

आप फ़रमाते हैं:

"हे लोग जो अपने आपको मेरी जमाअत में शुमार करते हो! आसमान पर तुम उसी समय मेरी जमाअत में गिने जाओगे जब सच्चाई से तक़वा के रास्तों पर चलोगे।"

(कश्ती-ए-नूह, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 19, पृष्ठ 15)

आप फ़रमाते हैं :

"अल्लाह की अज़मत (महानता) को अपने दिलों में बैठाओ, और उसकी तौहीद का इक़रार (स्वीकृति) केवल ज़बान से नहीं, बल्कि अमली तौर पर करो, ताकि अल्लाह भी अमली तौर पर अपना करम और इनाम तुम पर ज़ाहिर करे।"

(रिसाला अल-वासियत, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 20, पृष्ठ 308)

इसलिए, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इन हिदायतों को हमेशा अपने सामने रखें। जैसा कि मैंने कहा, यही उद्देश्य हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसे में आने और एक सच्चे अहमदी बनने का वर्णन किया है। हर अहमदी को इस नीयत से जलसे में शामिल होना चाहिए, जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हमें इन चीज़ों को अपने भीतर पैदा करना है।

अल्लाह तआला ने हमें जो माहौल प्रदान किया है, उससे पूरा लाभ उठाएं और इन दिनों में हर प्रकार की दुनियावी बुराइयों से खुद को शुद्ध करने की कोशिश करें। इस नियत से शुद्ध होने की कोशिश करें कि आने वाले जीवन में भी इन दुनियावी बुराइयों से खुद को दूर रखेंगे। हमेशा धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने की कोशिश करनी है और इसके लिए अपनी सारी क्षमताओं का उपयोग करना है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत में वही व्यक्ति गिना है, जिसने सच्ची तक़वा और पवित्रता को अपनाया है और अपनी हालातों को सुधारते हुए अपने अच्छे कर्मों के स्तर को बढ़ाने की कोशिश की है। उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की है कि अल्लाह तआला की ख़ुशी हासिल करने के लिए हर संभव प्रयास करें। अपनी ज़बानों को अल्लाह के वर्णन से तर रखें, अपनी रातें और दिन इबादतों में बिताएं। जो दुनियावी काम इंसान को अपने जीवन में करने पड़ते हैं, वे भी अल्लाह की याद से उसे गाफिल न करें। किसी भी समय उन दुनियावी कामों को अल्लाह के मुकाबले में न खड़ा करें। हर काम में अल्लाह की ख़ुशी की तलाश होनी चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

**"याद रखो, सच्चे बंदे अल्लाह तआला के वही होते हैं जिनके बारे में फ़रमाया गया है "لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ" (सूरः नूर, आयत : 38)

जब दिल अल्लाह तआला के साथ सच्चा संबंध और मोहब्बत पैदा कर लेता है, तो वह उससे अलग नहीं होता। यह एक स्थिति ऐसे समझी जा सकती है जैसे किसी का बच्चा बीमार हो तो चाहे वह कहीं भी जाए या किसी काम में व्यस्त हो, उसका दिल और ध्यान उसी बच्चे पर रहेगा। इसी तरह जो लोग अल्लाह तआला के साथ सच्चा संबंध और मोहब्बत पैदा करते हैं, वे किसी भी स्थिति में अल्लाह तआला को भूलते नहीं हैं।"**

(*मल्फ़ूज़ात*, खंड 7, पृष्ठ 20-21, संस्करण 1984)

इसलिए, अल्लाह तआला की यह याद और उसका वर्णन हर अहमदी के दिलो-दिमाग में हर समय रहना चाहिए। हमेशा यह कोशिश होनी चाहिए कि मैं हर काम अल्लाह की ख़ुशी के अनुसार करूं और अल्लाह के वर्णन से अपनी ज़बान को तर रखूं। उन सभी कामों से बचूं जिनसे अल्लाह तआला ने हमें रोका है।

यह हमेशा याद रखें कि मेरी हर हरकत और सुकून अल्लाह तआला की नज़रों के सामने है। इसलिए, मुझसे कोई ऐसा काम न हो जो अल्लाह तआला की नाराज़गी का कारण बने।

यह वह स्थिति है जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हममें देखना चाहते हैं और जिसे पाने के लिए हमें हर संभव कोशिश करनी चाहिए।

आज हम यह संकल्प लें कि जो अज़्म-ए-बैअत (प्रतिज्ञा) हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किया है, उसे हम हर संभव कोशिश से पूरा करेंगे। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा के तहत और उनके मिशन को पूरा करने के लिए ईमान को आसमान से ज़मीन पर लाने के लिए पूरी कोशिश करेंगे।

इसलिए, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इन शिक्षाओं को हमेशा अपने सामने रखें। जैसा कि कहा गया है, यह उद्देश्य हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने

इस जलसे में शामिल होने और एक सच्चे अहमदी बनने के लिए बताया है। हमें इस नीयत से जलसे में शामिल होना चाहिए कि क़ुरआन की शिक्षाओं का पालन करेंगे ताकि हम "ख़ैर-ए-उम्मत" में से हों, यानी उस उम्मत में गिने जाएं जिसके लिए अल्लाह ने भलाई रखी है। हम हर कार्य से अल्लाह के पवित्र उदाहरण स्थापित करेंगे।

हम यह प्रण करते हैं कि यह ईमान और यह शिक्षा हमारे दिलों और कर्मों का स्थायी हिस्सा बनेंगे, इन शा अल्लाह। और हम हमेशा अपनी ज़बानों को अल्लाह के इस हुक्म के मुताबिक ज़िक्र-ए-इलाही से तर रखेंगे। अल्लाह कहता है, "हे ईमान वालो! अल्लाह का बहुत वर्णन किया करो" (सूरः अहज़ाब, आयत : 42)। अल्लाह ने यह अवसर दिया है कि इन दिनों में हमें ज़िक्र-ए-इलाही और इबादत की ओर ध्यान देना चाहिए ताकि तक़वा के स्तर बढ़ें। हम अल्लाह के करीब पहुँच सकें और जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है, इसके परिणामस्वरूप अल्लाह अपनी कृपा और अनुग्रह तुम पर प्रकट करेगा।

इसलिए, तक़वा में वृद्धि करने से अल्लाह की कृपा और अनुग्रह प्राप्त होगा, जिसका एक माध्यम हक़ूक़-उल्लाह (अल्लाह के अधिकारों) की अदायगी है, और यह हक़ इबादत और ज़िक्र-ए-इलाही से पूरा होगा। हज़रत मसलिह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसे के संदर्भ में इस बात को यों व्यक्त किया कि यह जलसा अल्लाह के चिन्हों में से एक है।

(संदर्भ: उद्घाटन भाषण, जलसा सालाना 26 दिसंबर 1931, अनवारुल उलूम, खंड 12, पृष्ठ 389)।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसे में शामिल होने का उद्देश्य बताया है कि इससे रूहानियत (आध्यात्मिकता) में प्रगति हो, और इसका एक बड़ा माध्यम इबादत और ज़िक्र-ए-इलाही है। अल्लाह तआला ज़िक्र-ए-इलाही के बारे में फ़रमाता है कि उसके कई लाभों में से एक बड़ा और महान लाभ यह है कि "उज़्कुरूल्लाह यज़्कुरकुम" (अल्लाह का वर्णन करो, वह तुम्हारा वर्णन करेगा)।

इसलिए, वह व्यक्ति भाग्यशाली है जिसका वर्णन उसका मालिक, उसका सृष्टिकर्ता और असली मालिक करता है, और उस पर अपनी कृपा और अनुग्रह प्रकट करता है।

इन दिनों में इस महत्वपूर्ण विषय पर सभी को विशेष ध्यान देना चाहिए। चाहे वह जलसे की जगह पर बैठे हुए लोग हों, महिलाएं हों, या किसी सेवा में लगे हुए व्यक्ति, या लजना (महिला संगठन), नासिरात (लड़कियां), या अत्तफ़ाल (बच्चे), सभी को इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

अगर हम इबादत और ज़िक्र-ए-इलाही को उतनी अहमियत नहीं देंगे जितनी देनी चाहिए, तो न तो हम अल्लाह के इस प्रतिनिधि के साथ सच्चा संबंध जोड़ पाएंगे और न ही अल्लाह की ख़ुशी हासिल कर पाएंगे। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है, "तुम आकाश पर उस वक्त मेरी जमाअत में गिने जाओगे जब तुम वास्तव में तक़वा की राहों पर चलोगे" (कश्ती-ए-नूह, रूहानी खज़ायन, खंड 19, पृष्ठ 15)।

यह एक ऐसा वाक्य है जो हमारे रोंगटे खड़े कर देने वाला होना चाहिए। हम इसे पढ़ते हैं, सुनते हैं, और इसे जमाअती कार्यक्रमों में कई बार दोहराया जाता है, लेकिन हम अक्सर इसे सतही तौर पर देखकर गुज़र जाते हैं। थोड़ी देर के लिए ध्यान देते हैं, फिर इसे भूल जाते हैं। इसलिए, एक सच्चे और ईमानदार अहमदी को हमेशा इस बात पर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हर वाक्य और हर शब्द, जो उन्होंने अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए कहा, हमें जागृत करने वाला है।

चाहे हम हज़ार बार कहें कि हम अहमदी हैं, लेकिन अगर आर्श का मालिक हमें इस सूची में शामिल नहीं करता, तो हमारा अहमदी होने का दावा भी बेकार है।

और हमारे इन जलसों में आने का मउद्देश्य भी बेकार है। इसलिए इन दिनों में खूब दुआएं करें। अल्लाह से संबंध स्थापित करें। ज़िक्र-ए-इलाही पर ज़ोर दें। अपने दिल के अंधेरों को मिटाते रहें। ज़ुल्मात (अंधकार) को दूर करें।

इसी संदर्भ में मैं यहाँ एक अपील भी करना चाहता हूँ।

हज़रत खलीफातुल् मसीह सालिस रज़ियल्लाहु अन्हो का एक ख्वाब था कि उन्हें किसी बुजुर्ग ने कहा कि अगर जमाअत का हर व्यक्ति, हर बड़ा 200 बार यह दुरूद पढ़े:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ

और फिर उन्होंने कहा कि जो मध्य आयु के लोग हैं, 15 से 25 वर्ष के लोग, वे भी कम से कम 100 बार पढ़ें। बच्चे भी कम से कम 33 बार पढ़ें। छोटे बच्चे, जिनकी उम्र कम है, उन्हें उनके माता-पिता 3 या 4 बार यह पढ़ाएँ।

साथ ही 100 बार अस्तग़फ़ार भी करें।

इसी तरह मैं यह भी जोड़ता हूँ कि 100 बार

رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ

का वर्णन भी इन दिनों में विशेषता और आमतौर पर हमेशा के लिए करें।

आपको ख्वाब में यही दिखाया गया था कि

अगर आप ऐसा करेंगे, तो आप एक सुरक्षित किलें में सुरक्षित हो जाएँगे जहाँ शैतान कभी प्रवेश नहीं कर सकता और इस किले की दीवारें लोहे की हैं, जो आसमान तक पहुँची हुई हैं। इसलिए कोई छिद्र ऐसा नहीं रहेगा जहाँ से शैतान हमला कर सके।

(संदर्भ: रिपोर्ट मजलिस मशावरत जमाअत अहमदीया 1968, 7, 6, 5 अप्रैल 1968, पृष्ठ 233)

"इन दिनों जब शैतान हर तरफ से हम पर, एक समुदाय के रूप में और व्यक्तिगत रूप से, और पूरी दुनिया पर हमला करने की कोशिश कर रहा है, तो इससे बचने का एक ही तरीका है कि हम विशेष रूप से प्रार्थना पर ध्यान दें। और केवल सभा के दिनों में ही नहीं, बल्कि हमेशा के लिए यह दुरूद शरीफ और ज़िक्र-ए-इलाही जो है, यह वर्द जो है, इसे अपने जीवन का हिस्सा बना लें। और इस पर हर किसी को, बच्चों को, बड़ों को, महिलाओं को, पुरुषों को, सभी को ध्यान देना चाहिए। दूसरी बात यह है कि यहां बहुत सी वैज्ञानिक, प्रशिक्षण और आध्यात्मिक सुधार लाने के लिए भी भाषण होंगे। इन्हें भी सुनें। अल्लाह तआला के सामने इन भाषणों को सुनते हुए वचन करें और मदद मांगें कि हे ईश्वर! हम नेक नीयत से तेरे मसीह के बुलावे पर दिलों के सुधार के लिए हाजिर हुए हैं, लेकिन यह सुधार हम अपने बलबूते से नहीं कर सकते।

तेरी मदद की बहुत जरूरत है। अगर इय्याक नस्तईन की दुआ सुनते हुए तूने हमारी मदद नहीं की तो हम तेरी इबादत के मापदंड प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए यह दुआ करें कि हे मेरे परमेश्वर! हे मेरे प्यारे परमेश्वर! तुझे तेरा ही वासता है कि हमें बर्बाद होने से बचा ले। जिस नेक उद्देश्य के लिए हम यहां इकट्ठे हुए हैं, उससे हमें भरपूर हिस्सा दे। अपने फ़ज़ल को हम पर नाज़िल फरमा क्योंकि तेरे फ़ज़ल के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते। हमारे दिलों को इतना पवित्र और साफ कर दे कि जो कुछ हम सुनें उससे केवल ज्ञान और साहित्यिक आनंद लेने वाले न बन जाएं बल्कि इन प्रशिक्षण और आध्यात्मिक मानकों को ऊंचा करने वाले बनें जो तुझे करीब लाएं और इन्हें अपने जीवन का हिस्सा बना लें। इस पर अमल करने वाले बनें। अपनी पीढ़ियों में भी इन बातों को जारी रखने वाले बनें। इसलिए जब हम नेक नीयत से सभा के कार्यक्रमों से फायदा उठाने की कोशिश करेंगे, दुआएं करते हुए सभी बातों को अपने जीवन पर लागू करने की कोशिश करेंगे तो तभी हम अपने जीवन में क्रांति लाने वाले बन सकेंगे। इस क्रांति में हिस्सा लेने वाले बन सकेंगे जिस क्रांति को लाने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भेजे गए थे और फिर इसके परिणामस्वरूप हम दुनिया में क्रांति लाने वाले बनेंगे अन्यथा दुनिया जिस तरह आजकल लहू और लुत्फ में डूबी हुई है यह तबाही की ओर जा रही है जैसा कि मैंने कहा हर तरफ से शैतान हमला कर रहा है। इससे हम बच नहीं सकते। अगर हम भी इसमें पड़ गए तो फिर इसको बचाने वाला, दुनिया को बचाने वाला कोई नहीं होगा और हम भी दुनिया के साथ ही डूबने वालों में शामिल हो जाएंगे। इसलिए बहुत डरने की बात है। एक अहमदी को हमेशा सोचना चाहिए और हमेशा इस बात की ओर ध्यान देना चाहिए कि मैंने इस उद्देश्य को हासिल करना है जो मेरी ज़िंदगी का उद्देश्य है और जो मेरी बैअत का उद्देश्य है जिसके लिए मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत की है और वादा किया है कि मैं इसे हासिल करने की पूरी कोशिश करूंगा।

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसे (सभा) के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह बताया है कि इकट्ठे होने वाले आपस में परिचय बढ़ाएं अर्थात आपस में प्रेम और प्यार और परिचय को बढ़ाएं।

(माखूज़ अज़ शहादतुल कुरआन, रुहानी खज़ायन भाग 6 पृष्ठ 394)

और अगर इस का हक़ अदा करते हुए इस उद्देश्य को हासिल करने वाले बनेंगे तो तभी हम असली मायने में वह जमाअत के सदस्य बन सकेंगे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम चाहते हैं। इसलिए इन दिनों में रिश्तों को बढ़ाने में, प्यार को बढ़ावा देने में, आपस में सलामती को फैलाने में बहुत ज़्यादा ज़ोर दें और पहले जो रिश्ते हैं उनमें पहले से बढ़कर बेहतरी पैदा करने की कोशिश करें।

अगर किसी वजह से कोई रंजिश पैदा हो चुकी है तो उसे दूर करने की कोशिश करें। अल्लाह तआला की रज़ा के हासिल करने के लिए न सिर्फ बेकार बातों से बचें बल्कि प्यार और मोहब्बत का माहौल बनाने की कोशिश करें। न सिर्फ यह कि लड़ाई झगड़ों से बचें बल्कि अपने जो पुराने लड़ाई झगड़े हैं उन पर भी एक दूसरे से माफ़ी मांगें और माफी मांगें। ज़ाती अहंकार के जाल से निकल जाएं। मुझे कई शिकायतें

आती हैं कि थोड़ी सी बात पर लोग एक दूसरे से लड़ पड़ते हैं। जमाअत की बदनामी का कारण भी बनते हैं। कई बार मैं इस बारे में कह चुका हूं। पिछले सम्मेलन में यू.के में भी मैंने यही बात कही थी। इस पर ध्यान दें। जब ऐसी हरकतें हों तो कुछ को फिर मजबूरी में जमाअती सिस्टम के तहत जमाअत की खातिर, जमाअत के सम्मान की खातिर सजा भी देनी पड़ती है जिससे फिर तकलीफ भी होती है। यह नहीं कि खुशी से सजा दी जा रही होती है।

इसलिए हमेशा याद रखें कि जमाअत के पवित्रता को हमें कायम रखना है और प्रशासन और खलीफा भी अगर किसी को कोई सजा देते हैं तो जमाअत की पवित्रता को कायम करने के लिए देते हैं क्योंकि जमाअत की पवित्रता सभी रिश्तों से ज़्यादा और ऊंची है। अगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से असली ताल्लुक है तो अपनी हरकतों पर पछताते हुए आपस में पैदा हुई हुई दरारों को, फ़ासलों को न सिर्फ इस मोहब्बत की वजह से जोड़ने वाले बनें बल्कि मोहब्बत के ताल्लुकात पैदा करें। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म पर अमल करने वाले बनें कि एक मुसलमान से दूसरे मुसलमान को उसकी ज़बान और हाथ से कभी कोई तकलीफ न पहुंचे।

"फिर इन दिनों में जब कि ख़ुदा ताआला की रज़ा के हासिल करने के लिए इकट्ठे हुए हैं, उसके आगे झुकते हुए उससे दुआएं मांगते रहें। पूर्ण ईमान के साथ ज़िक्र-ए-इलाही में मशगूल रहें। पूर्ण फ़रमांबर्दारी के साथ अल्लाह ताआला के बताए हुए तरीक़े पर चलने वाले बनें तो फिर यह हो ही नहीं सकता कि किसी भी मौक़े पर निज़ाम-ए-जमाअत की फ़रमांबर्दारी से बाहर हों।

एक तरफ़ तो यह कोशिश हो कि हम आसमान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में लिखे जाएं और दूसरी तरफ़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के ख़लीफ़ाए ज़मां के कायम किए हुए निज़ाम-ए-जमाअत की आज्ञाकारित से बाहर जा रहे हों, यह किस तरह हो सकता है? ये दो अमलियां हैं।

नेक नीयत से अल्लाह ताआला के आगे झुकने वाले कभी ये दो अमलियां नहीं दिखा सकते। इसलिए इन दिनों में दिलों के इस मेल को भी दुआओं के ज़रिए से इस्लाह के ज़रिए से धोने की कोशिश करें। अल्लाह ताआला ने जो अवसर फ़राहम फ़रमाया है इस की कदर करें। अगर इस्लाह की ग़रज़ से जमाअत में शामिल हुए हैं और कोई मेला समझ कर शामिल नहीं हुए जैसे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह जमाअत कोई मेला नहीं है। (उद्धारित शहादतुल कुरआन, रुहानी खज़यन भाग 6 पृष्ठ 395) तो यक़ीनन फिर दिलों के मेल भी धोए जाएंगे।

कई दफ़ा रोज़मर्रा की ज़िंदगी में और जमाअत के बाद के दिनों में भी एक आम अहमदी की रंजिशें और झगड़े उहदेदारों से भी हो जाते हैं तो ऐसी सूरत में अगर यह ज़हन में हो कि इस जमाअत का उद्देश्य क्या है तो हर अहमदी अपने पुराने झगड़े भी ख़त्म करने की कोशिश करेगा। अगर यहां कोई तल्खी की सूरत पैदा हुई है तो उसे भी दूर करने की कोशिश करेगा। उहदेदार और जमाअत के दिनों में ड्यूटी देने वाले भी इस बात का ख़याल रखें कि हमें हर तरह से आला अख़लाक का ज़ाहिर करना है और अल्लाह ताआला की खातिर अपनी ज़ाती अहंकारों और रंजिशों को दूर करने की कोशिश करनी है और भाई भाई बनकर रहने का हमने जो वादा किया है उसको पूरा करने की कोशिश करनी है।

आला अख़लाक के मआयने सबसे ज़्यादा ड्यूटी देने वालों से ज़ाहिर होने चाहिए क्योंकि बहिसैत कारकन व उहदेदार इनकी ज़्यादा ज़िम्मेदारी है इसलिए इनमें बर्दाश्त का पहलू भी ज़्यादा होना चाहिए कि अगर कोई ज़्यादती हो भी जाए तब भी उसे बर्दाश्त करें और कभी मुकाबले पर आकर दूसरे को सख्ती से जवाब न दें।

जब आप यह करेंगे तो यह आप के ऊंचे अख़लाक हैं जो दूसरों के लिए भी उदाहरण बन जाएंगे। इसलिए अगर उहदेदार अपने आप को उहदेदार के बजाय ख़ादिम समझें और हर कारकुन अपने आप को ख़ादिम समझे और अफ़राद-ए-जमाअत अपने उहदेदारों को निज़ाम-ए-जमाअत चलाने के लिए खलीफाए ज़मां के मुक़र्रर किए हुए कारकुन समझें तो ये ताल्लुकात हमेशा मोहब्बत और प्यार के ताल्लुकात की सूरत में रहेंगे जो खलीफाए ज़मां के ताबे होकर दुनिया को आमन और सलामती का हक़ीकी पैग़ाम देने वाले होंगे। दुनिया में एक इनक़लाब पैदा करने वाले होंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअत को पूरा करने वाले होंगे। इन राहों पर चलने वाले होंगे जिन राहों पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें चलाना चाहते हैं। इन अर्थों को हासिल करने वाले होंगे जिन अर्थों के हासिल करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारी राहनुमाई फ़रमाई है।

"आप एक जगह फ़रमाते हैं कि 'हे सआदतमंद लोगों! तुम ज़ोर के साथ इस तालीम में दाखिल हो जो तुम्हारी निजात के लिए मुझे दी गई है।' यानी एक कदम जो तुमने सआदत का हासिल कर लिया तो तुम्हारे अंदर सआदत थी। तुमने मुझे पा लिया, मेरी बैअत कर ली लेकिन अब इस तालीम को अपनी ज़िंदगियों का अमली हिस्सा भी बनाओ तभी ये सआदत के जोहर निखरेंगे। फ़रमाते हैं कि 'तुम ख़ुदा को वाहिद लाशरीक समझो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक मत करो। न आसमान में से न ज़मीन में से।' फिर फ़रमाते हैं 'ख़ुदा असबाब के इस्तेमाल से तुम्हें मना नहीं करता' बेशक दुनियावी असबाब इस्तेमाल करो 'लेकिन जो शख्स ख़ुदा को छोड़कर असबाब पर ही भरोसा करता है वह मुशरिक है। क़दीम से ख़ुदा कहता चला आया है कि पाक दिल बनने के सिवा निजात नहीं। सो तुम पाक दिल बन जाओ और नफ़सानी क़ीनों और गुस्सों से अलग हो जाओ। इंसान के नफ़्स-ए-अमारा में कई क़िस्म की पलीदियां होती हैं परंतु सबसे ज़्यादा तकब्बर की पलीदी है। अगर घमंड न होता तो कोई शख्स काफ़िर न रहता। सो तुम दिल के मस्कीन बन जाओ। आम तौर पर बनी नौ की हमदर्दी करो जबकि तुम उन्हें बेहिश्त दिलाने के लिए वज़्ज़ करते हो।' यानी हम कहते यही हैं कि इस्लाम है जो असल निजात दिलाने वाला दीन है और इसी से अल्लाह ताआला का क़ुरब पा सकते हैं। तो लोगों को हम बेहिश्त की नसीहत करते हैं। आप फ़रमाते हैं बनी-नौ की हमदर्दी करो जबकि तुम उन्हें बेहिश्त दिलाने के लिए नसीहत करते हो। 'सो यह नसीहत तुम्हारा कब सही हो सकता है अगर तुम इस कुछ रोज़ा दुनिया में इनकी बदख़्वाही करो। ख़ुदा ताआला के फ़रायज़ को दिली ख़ौफ़ से बजा लाओ कि तुम इनसे पूछे जाओगे। नमाज़ों में बहुत दुआ करो कि ता ख़ुदा तुम्हें अपनी तरफ़ खींचे। और तुम्हारे दिलों को साफ़ करे क्योंकि इंसान कमज़ोर है। हर एक बुराई जो दूर होती है वह ख़ुदा ताआला की क़ुव्वत से दूर होती है।' फ़रमाया कि 'और जब तक इंसान ख़ुदा से क़ुव्वत न पावे किसी बुराई के दूर करने पर कादिर नहीं हो सकता।

इस्लाम केवल यह नहीं है कि रस्म के तौर पर अपने तैं कलमा गू कहलाओ बल्कि इस्लाम की हक़ीकत यह है कि तुम्हारी रूहें ख़ुदा ताआला के आस्ताने पर गिर जाएं और ख़ुदा और उसके अहकाम हर एक पहलू के रू से तुम्हारी दुनिया पर तुम्हें मुक़द्दम हो जाएं।'

(तज़कीरातुल् शहादतैन, रुहानी खज़ायन भाग 20 पृष्ठ 63)

यानी तुम दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने वाले बनो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ये कायम किए हुए मापदंड हैं जिन्हें अपने अंदर पैदा करने और हासिल करने की कोशिश हमें करनी चाहिए कि नफ़सानी क़ीनों और गुस्सों से अलग होना है। ये बड़ा अच्छा मौक़ा है। इन दिनों में इस की तरफ़ कोशिश करनी चाहिए।

"इन दिनों में जहां रूहानी माहौल पैदा होता है, इसलिए अपना हिसाब करने की तरफ तवज्जो भी पैदा होती है और हिसाब करने की तरफ तवज्जो पैदा होनी चाहिए। इस बात पर ही गौर करें कि आपने फ़रमाया कि घमंड से बचो क्योंकि घमंड ही है जो नाफ़रमान बनाता है। घमंड ही है जिसने अंबिया का इन्कार करवाया। घमंड ही है जो निज़ाम-ए-जमाअत के ख़िलाफ़ भी भड़काता रहता है और फिर जो निज़ाम-ए-जमाअत है उसके मुक़ाबले में खड़ा करता है। घमंड ही है जो एक दूसरे से लड़ाता भी है। घमंड ही है जो फिर अपनी अना की झूठी गैरत दिखाता है। घमंड से बचने की बहुत कोशिश करो।"

"फिर हक़ीकी हमदर्दी अल्लाह ताआला की मख़लूक से पैदा करने का कहा है। तुम्हारी बातों का असर तब ही होगा, तबलीग तब ही प्रभावी होगी जब हक़ीकी हमदर्दी मख़लूक से पैदा होगी। यहां हमेशा जलसों में लोग आते हैं, हमारे जलसों से लोग प्रभवित होते हैं, हमारे माहौल को देख कर प्रभावित होते हैं क्योंकि उस वक़्त उनमें उनको ये बात नज़र आ रही होती है कि अहमदी दिल के साथ अपने मेहमानों की खिदमत कर रहे हैं और प्यार और मोहब्बत से रह रहे हैं और ये खामोश तबलीग होती है जिसकी तरफ़ मैं हमेशा तवज्जो दिलाता रहता हूं। ये तबलीग ही है जो लोगों के दिलों में अहमदियत के पैग़ाम की हक़ीकत को ग़ालिब करने की कोशिश करती है। यहां आपके जलसे में भी मुख्तलिफ़ देशों से लोग आए हुए हैं और हमेशा की तरह मुझे उम्मीद है कि ये लोग नेक असर ले कर जाएंगे बशर्ते कि आप लोग अपना नेक असर डालने की कोशिश करें और अपने क़ौल-ओ-फ़ल को एक करते हुए, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की और इस्लाम की तालीम पर अमल करते हुए अपनी सादगी और इनक़सारी के साथ और ख़ुदा ताआला के हुज़ूर झुकते हुए इन उद्देश्यो को हासिल करने वाले बनें जो जलसे को हासिल करने वाले उद्देश्य हैं, जो तक़वा को हासिल करने का मक़सद है और जिससे नेकियां करने की तौफ़ीक पैदा होती है और जब ये होगा तो हमारी दावते इलल्लाह में भी बरकत पड़ेगी।"

"आजकल इस्लाम के ख़िलाफ़, मुसलमानों के ख़िलाफ़ बहुत सी बातें की जाती हैं लेकिन जब यहां के माहौल में प्यार, मोहब्बत और भाई चारा देखेंगे और हमारे आला अख़लाक देखेंगे, हमारे ख़ुदा ताआला से ताल्लुक देखेंगे तो बहुत से ऐसे लोग हैं जिनके

दिमागों में से ये शुकूक-ओ-शुबाहात दूर हो जाएंगे कि मुसलमान ग़लत अमल करने वाले हैं, ग़लत तालीम देने वाले हैं।"

"अतः इन दिनों में अपने क़ौल-ओ-फ़ल से इस माहौल को ऐसा आमन माहौल बनाएं बल्कि हमेशा अपनी ज़िंदगियों में इसको लागू करें जिससे एक ऐसा असर दुनिया पर कायम हो कि लोग कहें कि ये ही लोग हैं जो इस्लाम की हक़ीकी तालीम पर अमल करने वाले हैं और इस्लाम की हक़ीकी तालीम ही है जो दुनिया को हक़ीकी आमन और सलामती दे सकती है। अतःये खामोश तबलीग भी है जो बग़ैर किसी लिटरेचर, बग़ैर किसी दलील के आप लोग कर रहे होंगे। अगर हम अपनी ज़िंदगियों में हक़ीकी इस्लामी तालीम का असल उदाहरण पैदा कर लें तो अपना उहद-ए-बैअत पूरा करने वाले बन जाएंगे।"

"हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत तभी फ़ायदा देगी जब हम दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखेंगे, सिर्फ़ खोखले नारों पर इन्तिज़ार नहीं करने वाले होंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किस दर्द और तड़प से अपनी जमाअत को नसीहत फ़रमाई है इसका एक उदाहरण मैं आपको पेश करता हूँ। आप फ़रमाते हैं:

"दुआ करता हूँ और जब तक मुझमें दम ज़िंदगी है किए जाऊंगा और दुआ यही है कि ख़ुदा ताआला मेरी इस जमाअत के दिलों को पाक करे और अपनी रहमत का हाथ लंबा करके इनके दिल अपनी तरफ़ फ़ीर दे और समस्त शरारतें और क़ीने इनके दिलों से उठा दे और बाहमी सच्ची मोहब्बत अता करे और मैं यक़ीन रखता हूँ कि ये दुआ किसी वक़्त क़बूल होगी और ख़ुदा मेरी दुआओं को ज़ाया नहीं करेगा। हां मैं यह भी दुआ करता हूँ।' यह बड़ी तनबीह करने वाली बात आपने फ़रमाई है। कहते हैं 'हां मैं यह भी दुआ करता हूँ कि अगर कोई शख्स मेरी जमाअत में ख़ुदा ताआला के इल्म और इरादे में बदबख़्त अज़ली है जिसके लिए यह मुक़द्दर ही नहीं है कि सच्ची पाकीज़गी और ख़ुदा तरसी इसको हासिल हो तो इसको हे कादिर ख़ुदा मेरी तरफ़ से भी मुन्हरिफ़ कर दे जैसा कि वह तेरी तरफ़ से मुन्हरिफ़ है और इसकी जगह कोई और ला जिसका दिल नर्म और जिसकी जान में तेरी तलब हो।'

(शहादतुल कुरआन, रुहानी खज़ायन भाग 6 पृष्ठ 398)

अतः ये बात हमें झंझोड़ने वाली होनी चाहिए। अगर हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का हिस्सा बनना है तो अपने अंदर पाक तबदीलियां पैदा करनी होंगी वरना आपने फ़रमाया अगर ये नहीं तो फिर मेरे से कोई ताल्लुक नहीं क्योंकि मैं तो नेक लोगों से और सईद लोगों से ताल्लुक रखना चाहता हूँ। अतः जहां यह दुआ हमें उम्मीद और तवज्जो दिलाती है कि हम नेकियां करने वाले बनें वहां ख़ौफ़ का मक़ाम भी है कि इन नेकियों पर अमल न करके हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से दूर न हो जाएं। सिर्फ़ नाम की बैअत करने वाले न हों और बैअत कर के फिर अल्लाह ताआला के फ़ज़लों को हासिल करने की बजाय उसकी नाराज़गी को हासिल करने वाले न बन जाएं। अल्लाह ताआला हमें इस चीज़ से बचाए।"

"यह बात भी मैं कहना चाहता हूं कि जलसे के दिनों में हर ड्यूटी देने वाला, हर शामिल होने वाला माहौल पर भी नज़र रखे। आजकल जो हालात हैं उसमें कोई शरारती फ़ायदा उठा सकता है इसलिए सिक्योरिटी के लिहाज़ से बहुत होशियार हों। अल्लाह ताआला हर एक को हर शर से बचाए और यह जलसा समस्त बरकतें समेटने वाला हो और हर एक अल्लाह ताआला की हिफ़ाज़त में रहे। दुनिया के हालात के लिए भी बहुत दुआ करें। अपने मुल्क के लिए भी बहुत दुआ करें।

जब हम लोग ख़ालिस होकर अल्लाह ताआला के हुक्मों पर अमल करने वाले होंगे, उसकी रज़ा हासिल करने वाले होंगे, इस्लाम की हक़ीकी तालीम पर अमल करने वाले होंगे, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हक़ीकी मोहब्बत व इश्क़ का इज़हार करने वाले होंगे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गुलामी में इस्लाम की निशाते सानी के लिए और इस्लाम की तालीम को फैलाने के लिए आए हैं इसको पूरा करने वाले होंगे। अगर हमारी ये नियतें होंगी तो अल्लाह ताआला फिर यक़ीनन हमारी दुआएं भी सुनेगा और हम दुनिया की राहनुमाई का ज़रिया भी बनेंगे।

अल्लाह ताआला तौफ़ीक अता फ़रमाए कि हम जलसे की बरकतों से फ़ायदा उठाने वाले हों। अल्लाह ताआला इन तीन दिनों में ख़ास तौर पर और हमेशा आप सबको अपनी हिफ़्ज़-ओ-अमान में रखे और अपने फ़ज़लों की बारिश बरसाता रहे और दुआओं की तौफ़ीक भी देता रहे।

जो मैंने तहरीक की है दुरूद शरीफ़ दो सौ दफ़ा पढ़ने और अस्तग़फ़ार सौ दफ़ा पढ़ने और رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ पढ़ने की इस तरफ़ भी बहुत तवज्जो करें और ये सिर्फ़ तीन दिनों के लिए नहीं है बल्कि ये मुस्तक़िल तहरीक है। हर अहमदी को मुस्तक़िल पढ़ते रहना चाहिए। मांएं अपने बच्चों को भी ये दोहराती रहें। अल्लाह ताआला इस की तौफ़ीक अता फ़रमाए।

जलसे की इंतेज़ामिया ने ये भी लिख के मुझे भेजा था कि वहां कुछ प्रदर्शनियाँ भी आयोजित कर रहे हैं और कहा कि आप ये ऐलान कर दें कि लोग नुमाइशों को देखें। इसलिए इस तरफ़ भी मैं तवज्जो दिलाता हूँ कि इन नुमाइशों को भी देखें और इनसेलाभान्वित होने वाले हों और ताकि फिर आप को भी पता लगे कि अल्लाह ताआला के अफ़ज़ाल किस तरह हम पर हो रहे हैं। अल्लाह ताआला इस की तौफ़ीक दे और इन दिनों में ख़ास तौर पर जर्मनी वाले, मैं देख रहा हूँ कि मा शा अल्लाह काफ़ी बड़ी तादाद है दुआओं और ज़िक्र-ए-इलाही की तरफ़ ख़ास तवज्जो दें। अल्लाह ताआला हर लिहाज़ से बाबरकत फ़रमाए।"

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

स्थिरता के साथ अपने दावे को पेश करे, जो हमेशा सच्चे लोगों की ख़ासियत होती है। अगर मैं ख़ुदा की तरफ़ से न आया होता और उसने मुझे नियुक्त न किया होता, तो बताओ, इतनी गालियाँ, शोर-शराबा, मुख़ालफ़त और क़त्ल के फ़रमानों और केसों को अपने ऊपर लेने की किसे ज़रूरत होती? कोई भी इंसान ऐसी गालियाँ और भरे हुए ख़त सुनने के लिए तैयार नहीं होता, लेकिन मैं सच्चाई के साथ कहता हूँ कि यह मेरे बस में नहीं है। ख़ुदा जो चाहता है, करता है। उसने ही इस सिलसिले की बुनियाद रखी है, और उसने ही मुझे दिल की वह ताक़त दी है कि ये सारी मुसीबतें मेरे लिए कोई मायने नहीं रखतीं।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 35, एडीशन 2018, क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

इसी तरह, क़ुरबानी भी एक प्रतीकात्मक भाषा है, जिसका मतलब यह है कि जानवर को ज़बह करने वाला अपने नफ़्स (स्वयं) की क़ुरबानी पेश करने के लिए तैयार है। जो व्यक्ति क़ुरबानी करता है, वह इस बात का इज़हार करता है कि मैं ख़ुदा की राह में सब कुछ क़ुरबान कर दूंगा। इसके बाद दूसरा क़दम यह होता है कि इंसान उस प्रतीकात्मक क़ुरबानी को असल ज़िंदगी में भी पूरा करे, क्योंकि सिर्फ़ नकल, जिसमें हक़ीक़त न हो, कोई इज़्ज़त की बात नहीं हो सकती।

बकरे की क़ुरबानी और असल इरादा

आख़िर शरीफ़ लोग थिएटर में नक़ली बादशाह बनने वालों को पसंद क्यों नहीं करते? क्योंकि थिएटर में जो नक़ली बादशाह बनता है, उसकी असलियत नहीं होती, लेकिन असली बादशाह की इज़्ज़त सब करते हैं। अगर थिएटर में बादशाह बनने वाला अपनी असल ज़िंदगी में इसे हासिल करने के लिए मेहनत करे, तो उसे बुरा नहीं समझा जाएगा। इसी तरह, जो व्यक्ति बकरे की क़ुरबानी के साथ-साथ अपने नफ़्स की भी क़ुरबानी करता है, वह शरीफ़ों के नज़दीक इज़्ज़त के लायक होता है। लेकिन जो सिर्फ़ बकरे की क़ुरबानी पर ही संतुष्ट हो जाता है, वह नक़लची और तमाशा करने वाला होता है और इस कारण किसी इज़्ज़त का हक़दार नहीं होता।

अगर ग़ौर से देखा जाए, तो जानवरों को ज़बह होते देखकर इंसानी दिल पर गहरा असर होता है। यही असर पैदा करने के लिए क़ुरबानी को इबादत का हिस्सा बनाया गया है। इसका मतलब यह है कि जिस तरह यह जानवर, जो मुझ से छोटा है, मेरी ख़ातिर क़ुरबान हुआ, उसी तरह मैं भी तैयार हूँ कि अगर मुझसे ऊँची चीज़ों के लिए मुझे अपनी जान देनी पड़ी, तो मैं भी इसे ख़ुशी से क़ुरबान कर दूँगा।

जो व्यक्ति इस हिकमत को समझकर क़ुरबानी करता है, उसके दिल पर इसका गहरा असर पड़ता है। उसका दिल उसे याद दिलाता रहता है कि तूने अपने हाथों से बकरे को ज़बह किया और यह माना था कि छोटी चीज़ बड़ी चीज़ के लिए क़ुरबान होती है। इसी तरह तुझे भी सच्चाई और इंसानी भलाई के लिए क़ुरबान होने के लिए तैयार रहना चाहिए।

अल्लाह ने इस आयत में यही बताया है कि अल्लाह को न तो तुम्हारी क़ुरबानी का गोश्त चाहिए और न ख़ून, बल्कि ख़ुदा को वह नेक इरादा चाहिए, जो तुमने उसकी ख़ौफ़ (भय) में रखते हुए किया था। अगर तुम उस उद्देश्य को पूरा करोगे, जिसके लिए क़ुरबानी की है, तो फ़ायदा होगा, अन्यथा केवल गोश्त खाने और ख़ून बहाने से कोई हक़ीक़ी फ़ायदा नहीं होगा।

(तफ़्सीर-ए-कबीर, भाग 6, पृष्ठ 57, क़ादियान, 2010)

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

उफ़क की घटना

"इस घटना का उद्देश्य केवल एक पाक दामन और अत्यंत ही परहेज़गार और धार्मिक महिला की इज़्ज़त पर हमला करना नहीं था, बल्कि इसका बड़ा उद्देश्य, इसके माध्यम से, इस्लाम के मुकद्दस बानी की इज़्ज़त को बर्बाद करना और इस्लामी समाज में एक ख़तरनाक हलचल पैदा करना था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: "मैं इस बात को कभी नहीं भूल सकती कि हस्सान रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हिमायत में और क़ुफ़्फ़ार (काफ़िरों) के खिलाफ़ शेर कहा करते थे।"

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया

"हमें यह देखना चाहिए कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर जो इल्ज़ाम लगाया गया, उसका असल उद्देश्य क्या था?"

(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि.)

"एक मामूली सोच से भी यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर इल्ज़ाम लगाकर दो व्यक्तियों से दुश्मनी निकाली जा सकती थी। एक रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से, क्योंकि वह उनकी बीवी थीं, और एक हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से, क्योंकि वह उनकी बेटी थीं।"

(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि.)

"सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु यह यक़ीनन समझते थे कि रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद अगर किसी का दर्जा है, तो वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का है, और वही आपके खलीफ़ा बनने के योग्य हैं।"

(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि.)

"ख़िलाफ़त बादशाहत नहीं है। वह तो नूर-ए-इलाही (ईश्वरीय प्रकाश) को क़ायम रखने का एक माध्यम है। इसीलिए इसका क़ायम रहना अल्लाह तआला के हाथ में है। इसका नष्ट होना, नूर-ए-नबुव्वत और नूर-ए-इलाहियत का नष्ट होना है।"

(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि.)

उफ़क की घटना के संदर्भ में सिरत-ए-नब्वी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ पहलुओं का वर्णन

इमाम मुहम्मद बीलू साहिब (सूडान) की वफ़ात पर उनका ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब, साथ ही सूडानी अहमदियों के लिए दुआ की अपील।

अल्लाह तआला उनके हालात को भी बदले और मुल्क में, जैसा कि मैंने कहा, बड़ा फसाद फैला हुआ है, अल्लाह तआला उस फसाद को भी ख़त्म करे और उन लोगों पर रहम फ़रमाए। सब एक-दूसरे के हक़ अदा करने वाले बनें।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 अगस्त 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जर्मनी के जलसे से पहले, पिछले ख़ुत्बात (उपदेशों) में हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत (जीवन) के हवाले से चर्चा हो रही थी और इसमें हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के उफ़क की घटना (झूठे आरोप का मामला) का भी वर्णन था। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि "अल्लाह तआला ने अपनी नैतिकता में यह शामिल रखा है कि वह अपनी वॉर्निंग वाली भविष्यवाणियों को तौबा (पश्चाताप), अस्तग़फ़ार (माफी माँगना), दुआ और सदक़ा (दान) से टाल देता है। इसी तरह इंसान को भी उसने यही नैतिकता सिखाई है। जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ और हदीस से साबित है कि हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के बारे में, जो मुनाफ़ेक़ीन (पाखंडियों) ने सिर्फ़ दुश्टता से ग़लत इल्ज़ाम लगाया था, उस चर्चा में कुछ सीधे-सादे सहाबा भी शामिल हो गए थे। एक सहाबी ऐसे थे जो हज़रत अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के घर से दो वक्त की रोटी खाते थे। हज़रत अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उनकी इस ग़लती पर क़सम खाई थी और वॉर्निंग के तौर पर यह तय कर लिया था कि मैं इस ग़लत हरकत की सज़ा के तौर पर उसे कभी रोटी नहीं दूँगा। इस पर यह आयत नाज़िल हुई थी :

وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(अल् नूर: 23)

तब हज़रत अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अपनी क़सम को तोड़ दिया और फिर से उसे रोटी देना शुरू कर दिया।"

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं, "इसी आधार पर इस्लामी नैतिकता में यह शामिल है कि अगर किसी वॉर्निंग के तौर पर कोई क़सम खाई जाए, तो उसे तोड़ना नैतिकता में शामिल है। उदाहरणतः, अगर कोई अपने सेवक के बारे में क़सम खाए कि मैं उसे पचास कोड़े ज़रूर मारूँगा, तो उसकी तौबा और विनती पर माफ़

कर देना इस्लामी परंपरा है ताकि इंसान अल्लाह की नैतिकताओं को अपनाए। लेकिन वादा तोड़ना जायज़ नहीं है। वादे को तोड़ने पर हिसाब होगा, लेकिन वॉर्निंग को तोड़ने पर नहीं।"

(ज़मीमा बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा पांचवां, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 21, पृष्ठ 181)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ियल्लाहु अन्हु) "सीरत ख़ातमन नबिय्यीन" में उफ़क की घटना को बुखारी की रिवायत की रौशनी में वर्णन करते हैं और इसके बारे में लिखते हैं कि "इस मामले में यह रिवायत सभी रिवायतों से ज़्यादा तफ़सील और क्रमबद्ध है, और जो बातें दूसरे रावियों की रिवायतों से अलग-अलग हिस्सों में मिलती हैं, वे इस रिवायत में एक साथ जमा हैं। इसके अलावा, इस रिवायत से हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की घरेलू ज़िंदगी पर एक ऐसी रोशनी पड़ती है जिसे कोई भी इतिहासकार नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता। और सच्चाई के लिहाज़ से भी यह रिवायत ऐसे उच्चतम स्थान पर है जिसमें शक और शुबह की कोई गुंजाइश नहीं मानी जा सकती। अब ग़ौर करने का मक़ाम है कि यह कितना ख़तरनाक फ़ितना (विपत्ति) था जिसे मुनाफ़िक़ीन की तरफ़ से खड़ा किया गया था।"

इसमें सिर्फ़ एक पाकदामन और अत्यधिक परहेज़गार औरत की पवित्रता पर हमला करना ही उद्देश्य नहीं था, बल्कि असल मंशा इस्लाम के पवित्र संस्थापक की इज़्ज़त को बर्बाद करना और इस्लामी समाज में एक गंभीर संकट खड़ा करना था। मुनाफ़िक़ीन (पाखंडियों) ने इस गंदे और नीच प्रोपेगंडा को इस तरह फैलाया था कि कुछ सीधे-सादे लेकिन सच्चे मुसलमान भी उनके धोखे में आकर फँस गए और ठोकर खा बैठे। उनके मक्कारी और छल में फँस गए। इन लोगों में हस्सान बिन साबित (शायर), हुम्ना बिन्ते जहश (हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश की बहन) और मिसतह बिन उसासा का नाम विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। लेकिन हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की यह महान नैतिकता थी कि उन्होंने इन सबको माफ़ कर दिया और उनके प्रति अपने दिल में कोई कड़वाहट नहीं रखी।

एक रिवायत (कथन) में आता है कि इसके बाद जब भी हस्सान बिन साबित (रज़ियल्लाहु अन्हु) हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से मिलने आते थे, तो वह बहुत खुले दिल से उनसे मिलती थीं। एक बार हस्सान हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की सेवा में हाज़िर हुए, तो उस समय एक मुसलमान जिनका नाम मसरूक था, भी वहाँ मौजूद थे। मसरूक ने हैरान होकर कहा, "क्या! आप हस्सान को अपनी सेवा में हाज़िर होने की इजाज़त देती हैं!" हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने जवाब दिया, "जाने दो, बेचारे को आँखों की बीमारी हो गई है। यह क्या कम सज़ा है।" उन्हें आँखों की बीमारी हो गई थी। फिर हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) कहती हैं, "मैं इस बात को नहीं भूल सकती कि हस्सान ने हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हिमायत में और काफ़िरों के ख़िलाफ़ शायरी की थी।"

इसलिए हस्सान को इजाज़त दी गई और वह अंदर आकर बैठ गए। फिर उन्होंने हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की तारीफ़ में यह शेर कहा:

حَصَانٌ رَزَانٌ مَا تُزَنُّ بِرِيْبَةٍ
وَتُصْبِحُ غَرْثٰى مِنْ لُحُوْمِ الْغَوَافِلِ

अर्थात "वह एक पाकदामन और बुद्धिमान औरत हैं, और उनका मक़ाम शक और शुबह से ऊपर है। वह मासूम और ग़ाफ़िल औरतों के बारे में ग़लत इल्ज़ाम नहीं लगातीं और न ही उनकी ग़ीबत (निंदा) करती हैं।"

जब हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने यह शेर सुना, तो उन्होंने कहा, "وَلٰكِنْ اَنْتَ"। और एक दूसरी रिवायत में है कि उन्होंने कहा, "لَسْتَ كَذَالِكَ"। इसका मतलब था, "लेकिन तुम्हारा क्या हाल है? तुम तो इस खूबी के मालिक साबित नहीं हुए," अर्थात तुमने तो बेगुनाह मुझ पर इल्ज़ाम लगाने में हिस्सा लिया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ियल्लाहु अन्हु) लिखते हैं कि "मियूर साहिब," जो एक ओरिएंटलिस्ट थे, ने इस शेर का बिल्कुल ग़लत और अरबिक नियमों के विरुद्ध अर्थ निकालकर लिखा कि हस्सान ने आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के नाज़ुक शरीर की तारीफ़ की थी, जिस पर आयशा ने मज़ाक में उनकी मोटापे पर तंज़ किया।"

आप (हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब) लिखते हैं, "मयूर साहिब ने इस घटना के वर्णन में और भी बड़ी ग़लतियाँ की हैं। उदाहरणतः, वे लिखते हैं कि सफ़वान (रज़ियल्लाहु अन्हु) और हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) रास्ते में सेना को नहीं मिल सके और बाद में वे मदीना में सबके सामने आए। हालाँकि यह बात बिल्कुल ग़लत और पूरी तरह से बेबुनियाद है, क्योंकि हदीस और इतिहास से यह सर्वसम्मति से साबित है कि सफ़वान और हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) कुछ घंटों बाद रास्ते में ही इस्लामी सेना से मिल गए थे।"

आप आगे लिखते हैं, "लेकिन एक अच्छी बात यह है कि मियूर साहिब ने हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की मासूमियत को स्वीकार किया है। उन्होंने लिखा: 'हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की पहले और बाद की ज़िंदगी यह दिखाती है कि वे इस इल्ज़ाम से बरी थीं।' यह इल्ज़ाम तर्क और प्रमाण दोनों के अनुसार पूरी तरह ग़लत और झूठा साबित होता है, क्योंकि इसके अलावा कि हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) इस्लामी सेना से पीछे रह गई थीं और बाद में सफ़वान के साथ पहुँचीं, इल्ज़ाम लगाने वालों के पास कोई और सबूत नहीं था। न कोई गवाही थी और न ही कोई दूसरा सबूत था। और यह साफ़ है कि जब तक कोई आरोप साबित न हो, उसे हरगिज़ सच नहीं माना जा सकता, ख़ासकर ऐसे लोगों के बारे में जिनकी ज़िंदगी उनकी पवित्रता और चरित्र की गवाही देती हो। लेकिन मुसलमानों को संतुष्ट करने के लिए और इस उद्देश्य से कि भविष्य में ऐसे मामलों के लिए एक सिद्धांत निर्धारित किया जाए, अल्लाह की ओर से वह्यी (प्रकाशना) नाज़िल हुई। इसने न केवल इस इल्ज़ाम को पूरी तरह से झूठा करार दिया और हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) और सफ़वान बिन मुअत्तल की बेगुनाही को साबित किया, बल्कि भविष्य के लिए इस तरह की घटनाओं के संबंध में एक ऐसा सैद्धांतिक क़ानून पेश किया, जिस पर व्यक्तियों की इज़्ज़त, समाज की शांति और नैतिकता की हिफ़ाज़त निर्भर करती है।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन, पृष्ठ 568-567)

हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर इल्ज़ाम लगाने का कारण बताते हुए फ़रमाया:

"हमें देखना चाहिए कि हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर जो इल्ज़ाम लगाया गया, उसकी असली मंशा क्या थी? इसका कारण यह तो नहीं हो सकता कि उन लोगों को हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से कोई दुश्मनी थी। एक औरत, जो घर में बैठी हो, जिसका न राजनीति से कोई लेना-देना हो, न क़ज़ा से, न पदों से, न संपत्ति के वितरण से, न लड़ाइयों से, न दुश्मन क़बीलों पर हमलों से, न सरकार से और न ही आर्थिक मामलों से तो उससे कोई क्या दुश्मनी रख सकता है?" जब इन चीज़ों से कोई संबंध ही नहीं था। "तो हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से सीधे तौर पर दुश्मनी रखने का कोई कारण नहीं हो सकता। इस इल्ज़ाम के बारे में दो ही संभावनाएँ हो सकती हैं: या तो यह कि, अल्लाह माफ़ करे, यह इल्ज़ाम सही हो, जिसे कोई भी मोमिन एक पल के लिए भी स्वीकार नहीं कर सकता, ख़ासकर जब अल्लाह तआला ने इस गंदे विचार को आसमान से रद्द किया है। और दूसरी संभावना यह हो सकती है कि हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर इल्ज़ाम किसी अन्य उद्देश्य से, किसी और को नुक़सान पहुँचाने के लिए लगाया गया हो।"

अब हमें यह सोचने की ज़रूरत है कि वे कौन लोग थे जिनको बदनाम करना मुनाफ़िकों (कपटियों) के लिए या उनके नेताओं के लिए फायदेमंद हो सकता था, और किन लोगों से इस ज़रिए मुनाफ़िक अपनी दुश्मनी निकाल सकते थे। थोड़ा सा ग़ौर करने से ही समझ में आ सकता है कि हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर इल्ज़ाम लगा कर दो व्यक्तियों से दुश्मनी निकाली जा सकती थी। एक, रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से, और दूसरा, हज़रत अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, क्योंकि हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) एक की पत्नी थीं और दूसरे की बेटी थीं।

ये दोनों ऐसे लोग थे कि उनकी बदनामी राजनीतिक दृष्टि से या दुश्मनी के कारण कुछ लोगों के लिए फायदेमंद हो सकती थी, या कुछ लोगों के स्वार्थ उनकी बदनामी से जुड़े हो सकते थे। अन्यथा ख़ुद हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की बदनामी में किसी को कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती थी। अधिकतम, उनकी सौतनें (सह पत्नियाँ) ही उनसे कोई मसला रख सकती थीं। अर्थात उनकी दूसरी पत्नियाँ। और यह विचार हो सकता था कि शायद हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की सौतनें, उन्हें रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नज़रों से गिराने और अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए इस मामले में कुछ हिस्सा ले सकती थीं। परंतु इतिहास इस बात की गवाही देता है कि हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की सौतनें इस मामले में बिल्कुल शरीक नहीं हुईं।

हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का खुद कहना है कि रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बीवियों में से अगर किसी को मैंने अपना प्रतिद्वंद्वी और मुकाबले में समझा, तो वो हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ियल्लाहु अन्हा) थीं। उनके अलावा मैंने किसी और को अपनी प्रतिस्पर्धी नहीं माना। लेकिन हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) यह भी कहती हैं कि मैं हज़रत ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) का यह एहसान कभी नहीं भूल सकती कि जब मुझ पर इल्ज़ाम लगाया गया, तो सबसे ज़ोर से अगर किसी ने उस इल्ज़ाम का खंडन किया, तो वह हज़रत ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) थीं।

इसलिए अगर हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से कोई दुश्मनी रख सकता था, तो वह केवल उनकी सौतनें हो सकती थीं। और अगर वे चाहतीं, तो इस मामले में हिस्सा ले सकती थीं ताकि हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नज़रों से गिर जाएं, और इस तरह दूसरों की इज़्ज़त बढ़ जाए। लेकिन इतिहास से साबित है कि उन्होंने इस मामले में कोई दख़ल नहीं दिया। और अगर उनसे पूछा भी गया, तो उन्होंने हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की ही तारीफ़ की।

इसलिए मर्दों की औरतों से दुश्मनी की कोई वजह नहीं होती। तो हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर इल्ज़ाम या तो रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से दुश्मनी के कारण लगाया गया, या फिर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) से। रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जो मुकाम था, उसे इल्ज़ाम लगाने वाले किसी तरह छीन नहीं सकते थे। उन्हें जिस बात का डर था, वह यह कि रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद भी उनकी स्वार्थ सिद्धि में कोई बाधा न आए। वे देख रहे थे कि आपके बाद अगर कोई ख़लीफ़ा बनने का योग्य है, तो वह अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ही हैं।

इसलिए इस ख़तरे को भांपते हुए उन्होंने हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर इल्ज़ाम लगाया ताकि वे रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नज़रों से गिर जाएं, और उनके गिरने के साथ हज़रत अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) का जो स्थान मुसलमानों में था, वह भी चला जाए। मुसलमान उनसे बदगुमान हो जाएं, और वह श्रद्धा जो उन्हें हज़रत अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से थी, वह समाप्त हो जाए। और इस तरह रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद हज़रत अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के ख़लीफ़ा बनने का रास्ता पूरी तरह बंद हो जाए। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर इल्ज़ाम लगने के बाद ख़िलाफ़त का भी वर्णन किया, जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में सूरः नूर में आता है।"

"हदीसों में स्पष्ट रूप से उल्लेख आता है कि सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) आपस में बातचीत करते थे और कहा करते थे कि रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद अगर किसी का स्थान है, तो वह अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) का ही स्थान है। (अबू दाऊद, किताब अक्=ल्-सुन्ना, बाब फी अत-तफ़ज़ील)। हदीसों में आता है कि रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक बार हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से कहा, 'हे आयशा! मैं चाहता था कि अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) को अपने बाद नामित कर दूँ, लेकिन मैं जानता हूँ कि अल्लाह और मोमिन इसके सिवा किसी और को पसंद नहीं करेंगे, इसलिए मैंने कुछ नहीं कहा।'

(मुस्लिम, किताब फ़ज़ायल अल्सहाबा, बाब मिन फ़ज़ायल अबी बकर)।

अर्थात, वे लोग अबू बकर को ही चुनेंगे।

सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) यह यकीनन समझते थे कि रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद उनमें अगर किसी का दर्जा है, तो वह अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) का है और वही आपके ख़लीफ़ा बनने के योग्य हैं।

मक्का की ज़िंदगी में तो हुकूमत और उसके निज़ाम का सवाल ही पैदा नहीं होता था, लेकिन मदीना में जब रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तशरीफ़ लाए, तो हुकूमत कायम हो गई। इस स्थिति में मुनाफ़िकों के दिलों में यह सवाल उठने लगा कि आपके बाद कोई ख़लीफ़ा बनकर इस्लामी निज़ाम को लंबे समय तक न चला दे और हम हमेशा के लिए बर्बाद न हो जाएँ।" जो मुखालेफीन (विरोधी) थे, उन्होंने सोचा, "क्योंकि आपके मदीना तशरीफ़ लाने की वजह से उनकी कई उम्मीदें धराशायी हो गई थीं।"

इतिहास से यह साबित होता है कि मदीना में अरबों के दो क़बीले थे, औस और ख़ज़राज, जो हमेशा आपस में लड़ते रहते थे और हिंसा का माहौल बना रहता था। जब उन्होंने देखा कि इस लड़ाई की वजह से उनके क़बीलों का रुतबा घटता जा रहा है, तो उन्होंने आपस में सुलह की योजना बनाई और तय किया कि हम एक-दूसरे के साथ मेलजोल कर लेंगे और किसी एक व्यक्ति को अपना राजा बना लेंगे। इस फैसले के तहत औस और ख़ज़राज ने आपस में सुलह कर ली और यह निर्णय हुआ कि अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल को मदीना का राजा बना दिया जाए। इस फैसले के बाद उन्होंने तैयारियां भी शुरू कर दीं और अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल के लिए ताज बनाने का हुक्म भी दे दिया गया।

इसी बीच मदीना के कुछ हाजी मक्का से वापस आए और उन्होंने बताया कि आख़िरी ज़माने का नबी मक्का में प्रकट हो चुका है और हम उसकी बैअत (आध्यात्मिक अर्पण) कर आए हैं। इस पर रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दावे के बारे में चर्चाएँ शुरू हो गईं और कुछ दिनों के बाद और लोग भी मक्का जाकर रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बैअत कर आए। फिर उन्होंने रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से निवेदन किया कि आप हमारे प्रशिक्षण और प्रचार के लिए किसी शिक्षक को हमारे साथ भेजें।

इसलिए, रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक सहाबी (रज़ियल्लाहु अन्हु) को मुअल्लिम (शिक्षक) बनाकर भेजा और मदीना के बहुत से लोग इस्लाम में दाखिल हो गए। उन्हीं दिनों मक्का में रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और आपके सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को बहुत तकलीफ़ें दी जा रही थीं, इसलिए अहल-ए-मदीना ने आपसे गुज़ारिश की कि आप मदीना तशरीफ़ ले आएँ। इसलिए, रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने सहाबा के साथ मदीना हिजरत (प्रवासन) कर के आ गए (अस्सीरत-अन्नबविय्या ले-इब्न हिशाम, बाब मुनाफ़िकों का वर्णन और अंसार के इस्लाम में दाखिल होने का आरंभ)। अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल के लिए जो ताज तैयार करवाया जा रहा था, वह वहीं का वहीं रह गया, क्योंकि जब मदीना वालों को दोनों जहानों का बादशाह मिल गया, तो उन्हें किसी और राजा की क्या ज़रूरत थी।"

"अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल ने जब यह देखा कि उसकी बादशाहत के सारे अवसर खत्म हो गए हैं, तो उसे बहुत गुस्सा आया। हालाँकि वह दिखावे के तौर पर मुसलमानों में शामिल हो गया, लेकिन वह हमेशा इस्लाम में रुकावटें डालता रहा। चूँकि अब वह और कुछ नहीं कर सकता था, इसलिए उसके दिल में अगर कोई ख्वाहिश पैदा हो सकती थी, तो यह कि मोहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के देहांत के बाद वह मदीना का राजा बन जाए। लेकिन अल्लाह तआला ने इस मंशा में भी उसे नाकाम कर दिया, क्योंकि उसका अपना बेटा बेहद वफादार था। इसका मतलब यह था कि अगर वह राजा भी बन जाता, तो उसके बाद हुकूमत फिर इस्लाम के पास आ जाती। इसके अलावा, अल्लाह तआला ने उसे इस तरीके से भी नाकाम किया कि मुसलमानों के बीच एक नया निज़ाम कायम होते ही उन्होंने रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से अलग-अलग सवाल पूछना शुरू कर दिया कि इस्लामी हुकूमत का तरीका क्या होगा? आपके बाद इस्लाम का क्या बनेगा? और इस बारे में मुसलमानों को क्या करना चाहिए?

अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल ने जब यह स्थिति देखी, तो उसे डर पैदा होने लगा कि अब इस्लाम की हुकूमत इस तरह से कायम होगी कि इसमें उसका कोई हिस्सा नहीं होगा और वह इन हालात को रोकना चाहता था। जब उसने इस पर गौर किया, तो उसे महसूस हुआ कि अगर इस्लामी हुकूमत को इस्लामी उसूलों पर कोई व्यक्ति कायम कर सकता है, तो वह अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) हैं। और रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद मुसलमानों की निगाहें उन्हीं की तरफ उठती हैं और लोग उन्हें सबसे ज्यादा सम्मानित समझते हैं।

इसलिए उसने अपनी भलाई इसी में देखी कि अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) को बदनाम किया जाए और लोगों की नज़रों से गिराया जाए, बल्कि खुद रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नज़रों में भी उन्हें गिरा दिया जाए। इस बदनियती को पूरा करने का अवसर उसे हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के एक जंग में पीछे रह जाने की घटना से मिल गया, और उसने आप (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर एक बेहद गंदा इल्जाम लगा दिया। क़ुरआन करीम में इस बारे में इशारे से बताया गया है, लेकिन हदीसों में इसकी तफसील आती है। अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल का उद्देश्य यह था कि इस तरह से हज़रत अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) लोगों की नज़रों में भी ज़लील हो जाएँगे और आपके रिश्ते रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से भी खराब हो जाएँगे। और उस निज़ाम के कायम होने में रुकावट आ जाएगी, जिसका कायम होना उसे निश्चित दिखाई देता था और जिसके कायम होने से उसकी उम्मीदें बर्बाद हो जाती थीं।

चूँकि मुनाफ़िक अपनी मौत को हमेशा दूर समझता है और दूसरों की मौत के बारे में अटकलें लगाता रहता है, इसलिए अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल भी अपनी मौत को दूर समझता था। उसे पता नहीं था कि वह रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ज़िंदगी में ही तड़प-तड़प कर मरेगा। वह यह अंदाज़े लगाता रहता था कि जब रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का देहांत हो, तो मैं अरब का बादशाह बन जाऊँ। लेकिन अब उसने देखा कि अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की नेकी, परहेज़गारी और महानता को मुसलमान स्वीकार करते हैं। जब रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नमाज़ पढ़ाने नहीं आते, तो अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) आपकी जगह नमाज़ पढ़ाते हैं। जब रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कोई फतवा लेने का मौका नहीं मिलता, तो मुसलमान अबू बकर (रज़ियल्लाहु

अन्हु) से फतवा लेते हैं। यह देखकर अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल को, जो भविष्य में बादशाह बनने की उम्मीदें लगाए बैठा था, बहुत चिंता हुई। उसने सोचा कि इस स्थिति का समाधान निकाले।

इसलिए, अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की शख्सियत और उनके कद को मुसलमानों की नज़रों से गिराने के लिए उसने हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर इल्ज़ाम लगा दिया, ताकि इस इल्ज़ाम की वजह से रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से नफ़रत पैदा हो जाए। और इस नफ़रत का नतीजा यह हो कि अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) को रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और मुसलमानों की नज़रों में जो इज्जत हासिल है, वह कम हो जाए और उनके भविष्य में ख़लीफ़ा बनने का कोई अवसर न बचे।"

(तफ़्सीर-ए-कबीर, भाग 8, पृष्ठ 524-519, तफ़्सीर सूरः नूर, आयत 36)

हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उफ़्क़ की घटना और हज़रत अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की खिलाफ़त के बीच संबंध को वर्णन करते हुए लिखा, "सूरः नूर की शुरुआत से लेकर अंत तक एक ही विषय को वर्णन किया गया है। सबसे पहले उस इल्ज़ाम का वर्णन किया गया जो हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर लगाया गया था, और चूंकि हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर इल्ज़ाम लगाने का असल उद्देश्य हज़रत अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) को बदनाम करना था, ताकि रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से उनके रिश्तों में दरार पैदा हो जाए और नतीजतन मुसलमानों की नज़रों में उनकी इज़्ज़त कम हो जाए। इस तरह, रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वफात के बाद वह खलीफ़ा न बन सकें, क्योंकि अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल समझ चुका था कि रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद मुसलमानों की निगाहें अगर किसी पर उठती हैं तो वे हज़रत अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) हैं। अगर अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के ज़रिए खिलाफ़त कायम हो गई, तो अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल के बादशाह बनने के ख्वाब कभी पूरे नहीं होंगे।

इसलिए, अल्लाह तआला ने इस इल्ज़ाम के बाद ही खिलाफ़त का वर्णन किया और फ़रमाया कि खिलाफ़त कोई बादशाहत नहीं है, बल्कि यह अल्लाह के नूर को क़ायम रखने का एक ज़रिया है। इसके क़ायम रहने का मामला अल्लाह तआला ने अपने हाथ में रखा है। इसका खो जाना नबुव्वत के नूर और अल्लाह के नूर का खो जाना होगा। इसलिए वह ज़रूर इस नूर को क़ायम रखेगा और जिसे चाहेगा खलीफ़ा बनाएगा। बल्कि, वह वादा करता है कि वह मुसलमानों में से सिर्फ एक नहीं, बल्कि कई लोगों को खिलाफ़त पर क़ायम करके इस नूर के दौर को लंबा कर देगा। अगर तुम इल्ज़ाम लगाना चाहते हो, तो लगाते रहो, न तुम खिलाफ़त को मिटा सकते हो, न हज़रत अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) को खिलाफ़त से महरूम कर सकते हो, क्योंकि खिलाफ़त एक नूर है, जो अल्लाह के नूर के ज़ुहूर का एक ज़रिया है। इसे इंसान अपनी चालों से कहां मिटा सकता है।"

(तफ़्सीर-ए-कबीर, भाग 8, पृष्ठ 526, तफ़्सीर सूरः नूर, आयत 36)

हज़रत मसीह मौउद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं, "अंबिया (अलैहिस्सलाम) की भी यही हालत होती है कि जब अल्लाह तआला किसी मामले की इत्तिला देता है, तो वे उस पर अमल करते हैं या छोड़ देते हैं। देखिए! उफ़्क़ की घटना में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पहले कोई जानकारी नहीं थी। यहां तक कि हालात इस हद तक पहुंच गए कि हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) अपने वालिद के घर चली गईं और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यहां तक कहा कि अगर कोई गुनाह किया है, तो तौबा कर लो। इन घटनाओं को देख कर साफ पता चलता है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कितने परेशान थे। लेकिन यह राज़ एक वक्त तक आप पर खुला नहीं था। जब अल्लाह तआला ने अपनी वह्यी के माध्यम से आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की बेगुनाही को ज़ाहिर किया और फ़रमाया,

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ

'अल-ख़बीसातु लिल-ख़बीसीन, वल-ख़बीसून लिल-ख़बीसात, वत-तय्यिबातु लित-तय्यिबीन वत-तय्यिबून लित-तय्यिबात'

(सूरः नूर, आयत 27), तब आपको इस उफ़्क़ की हक़ीक़त मालूम हुई। क्या इससे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शान में कोई कमी आई? हरगिज़ नहीं। वह व्यक्ति ज़ालिम और नास्तिक है, जो इस तरह का कोई वहम करे। और यह कुफ़्र तक पहुंचता है। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और अंबिया (अलैहिस्सलाम) ने कभी यह दावा नहीं किया कि वे ग़ैब के आलिम हैं। ग़ैब का आलिम होना अल्लाह की शान है। अगर ये लोग अंबिया (अलैहिस्सलाम) की सुन्नत से वाकिफ होते, तो इस तरह के एतराज़ हरगिज़ न करते।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग3, पृष्ठ 316, मुदपिया 2022)

जो आप पर एतराज़ करते हैं, उनका भी आपने जवाब दिया।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा औस और खज़राज के सरदारों के बीच सुलह कराने का वर्णन भी मिलता है।

उनके बीच की रंजिशें (दुश्मनी) काफी बढ़ गई थीं। एक रिवायत (कथन) में आता है कि कुछ दिनों के बाद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत साद बिन मआज़ (रज़ि.अ) का हाथ पकड़ा और कुछ सहाबा (साथियों) के साथ हज़रत साद बिन उबादा (रज़ि.अ) के पास पहुंचे। वहां थोड़ी देर बातें कीं। हज़रत साद बिन उबादा (रज़ि.अ) ने खाना पेश किया। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), हज़रत साद बिन मआज़ और अन्य सहाबा ने उसमें से खाना खाया, फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वापस चले गए।

इसके बाद आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कुछ दिन और वहां ठहरे। फिर कुछ दिनों बाद आपने हज़रत साद बिन उबादा (रज़ि.अ) का हाथ पकड़ा और इस बार कुछ सहाबा के साथ हज़रत साद बिन मआज़ (रज़ि.अ) के घर गए। वहां भी थोड़ी देर बातें कीं और हज़रत साद बिन मआज़ (रज़ि.अ) ने खाना पेश किया। इस बार हज़रत साद बिन उबादा (रज़ि.अ), रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और अन्य सहाबा ने साथ में खाना खाया। इसके बाद आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फिर से वापस चले गए। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह सब इसलिए किया ताकि उनके दिलों में जो भी रंजिश (कड़वाहट) थी, वह खत्म हो जाए।

(किताब अल्-मग़ाज़ी वाक़दी, भाग 1, पृष्ठ 371, दारुल किताब अल्-इल्मिया)

यानि पहले एक बार आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक को लेकर दूसरे के घर गए, फिर दूसरी बार दूसरे को लेकर पहले वाले के घर में गए ताकि आपसी रंजिशें खत्म हों और वहां खाना खाया। दोनों ने एक-दूसरे को खाना खिलाया और इस तरह दुश्मनी खत्म हो गई। यह भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का एक तरीका था जिससे आप लोगों में प्यार और मोहब्बत पैदा करते थे और सुलह करवाते थे।

रिवायतों में इल्ज़ाम लगाने वालों की संख्या

हज़रत इब्न अब्बास (रज़ि.अ) की एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत आयशा (रज़ि.अ) पर किज़्फ़ (झूठा इल्ज़ाम) लगाने वालों की संख्या तीन थी। हज़रत इब्न अब्बास (रज़ि.अ) की एक और रिवायत में बताया गया है कि उनकी संख्या तीन से दस थी। इब्न उय्यिना ने उनकी संख्या चालीस बताई है, और मुजाहिद ने दस से पंद्रह के बीच की संख्या बताई है।

(माखूज़ अल्-जामे अल् अहकाम अल् -क़ुरआन, तफ़्सीर क़ुर्तबी, भाग 2, सुरह अल् -नूर: 12, पृष्ठ 2169, दारुल इब्न हज़्म)

वाक़िया-ए-इफ़्क़ (झूठा इल्ज़ाम) में शामिल लोगों की सज़ा

यह आता है कि सुनन अबू दाऊद में एक रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने दो मर्दों और एक औरत के बारे में क़ज़्फ़ की सज़ा का हुक्म दिया, जिन्होंने फहश (अनैतिकता) के बारे में बात की थी। वे हज़रत हस्सान बिन साबित और मिसतह बिन उथाथा थे। नुफैली कहते हैं कि लोग कहते हैं कि जो एक औरत थी वह हुम्ना बिन्त जहश थी।

(सुनन अबू दाऊद, किताब अल्-हुदूद, बाब हद अल्-काज़िफ, हदीस 4475)

इफ़्क़ (झूठे आरोप) लगाने वालों को सज़ा देने के बारे में मतभेद

अल्लामा मावरदी ने कहा है कि इफ़्क़ वालों को हद (सज़ा) देने में मतभेद है। एक कथन यह है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनमें से किसी को भी हद नहीं दी। दूसरा कथन यह है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अब्दुल्लाह बिन उबी, मिसतह बिन उथाथा, हस्सान बिन साबित और हामना बिन्त जहश को सज़ा दी। इमाम क़ुर्तबी कहते हैं कि मशहूर रिवायत यह है कि हस्सान, मिसतह और हामना पर हद (सज़ा) लगाई गई, लेकिन अब्दुल्लाह बिन उबी पर हद लगाए जाने का वर्णन नहीं मिलता।

अल-जामे लिल् अहकाम अल्-क़ुरआन, तफ़्सीर क़ुर्तबी, भाग 2, पृष्ठ -2170 2171, दार इब्न हज़्म

हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ि.अ) ने एक ख़ुत्बा (प्रवचन) में इसके बारे में वर्णन किया था कि "हज़रत आयशा (रज़ि.अ) पर इल्ज़ाम लगाने की वजह से तीन व्यक्तियों को कोड़े लगाए गए थे, जिनमें से एक हस्सान बिन साबित थे, जो हज़रत मुहम्मद

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 03-10 October 2024 Issue No. 40-41

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सबसे बड़े शायर थे। दूसरा मिसतह था, जो हज़रत आयशा (रज़ि.अ) का चाचा और हज़रत अबू बकर (रज़ि.अ) का खालाज़ाद भाई था। वह इतना ग़रीब था कि हज़रत अबू बकर (रज़ि.अ) के घर में ही रहता था, वहीं खाना खाता था और आप ही उसके लिए कपड़े भी बनवाते थे। इनके अलावा एक औरत भी थी। इन तीनों को सज़ा दी गई थी।"

(ख़ुत्बात-ए-महमूद, भाग18, पृष्ठ 280-279)

हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ि.अ) ने सूरः नूर की आयत 36 की तफ़्सीर में इब्न सलूल को कोड़े लगाए जाने का वर्णन भी किया है। इसमें आप (रज़ि.अ) कहते हैं, "لِكُلِّ امْرِءٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ لِّكُلِّ امْرِءٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ" - इन आरोप लगाने वालों में से उन लोगों में से जिसने जैसा गुनाह कमाया है, उसे वैसा ही अज़ाब (सज़ा) मिलेगा। जो लोग इस इल्ज़ाम लगाने की साज़िश में शरीक थे, उन्हें अस्सी-अस्सी कोड़े मारे गए। फिर फ़रमाया, "وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ" - मगर उनमें से एक व्यक्ति, जो सबसे बड़ा शरारती था और इस सारे फ़साद का बानी था, अर्थात अब्दुल्लाह बिन उबी इब्न सलूल, उसे हम न सिर्फ़ कोड़े लगवाएंगे बल्कि ख़ुद भी उसे अज़ाब देंगे।

इसलिए इस वईद के मुताबिक उसे कोड़ों की सज़ा भी दी गई (अल्-सीरत अल्-हल्बिया, बाब मगाज़िया, ग़ज़वा-ए-बनी मुस्तलिक) और फिर अल्लाह की तरफ़ से भी उसे अज़ाब मिला, और वह रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ज़िंदगी में ही तड़प-तड़प कर मर गया।"

(तफ़्सीर-ए-कबीर, भाग 8, पृष्ठ 524, सूरः नूर की आयत : 36)

यहां पर यह बातें खत्म होती हैं। **जर्मनी के जलसे के हवाले से** सिर्फ़ इतना ही कहना चाहता हूं कि आने वालों ने, और जो लोग पहली बार शामिल हुए थे या जो शरीक नहीं हो सके थे, उन सबने बहुत सकारात्मक अनुभव साझा किए और खुशी का इज़हार किया। इसके अलावा, इस जलसे के माध्यम से मीडिया और ख़बरों के ज़रिए कई मिलियन लोगों तक अहमदियत और इस्लाम की सही तालीम (शिक्षा) का पैग़ाम पहुंचा। जलसा इस लिहाज़ से भी तबलीग़ (प्रचार) का बहुत बड़ा ज़रिया होता है। जहां हम नहीं पहुंच सकते, वहां इस माध्यम से इस्लाम का पैग़ाम पहुंचता है।

अल्लाह तआला इसके नेक और दूरगामी नतीजे पैदा फ़रमाए और अहमदियों को भी असली रूप में इसका फ़ायदा उठाने की हमेशा तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दुआओं की तरफ ध्यान रखें।

अल्लाह तआला अपने फज़्लों और रहमतों की चादर में हमें हमेशा लिपेटे रखे।

आख़िर में मैं एक मरहूम का भी वर्णन करूंगा। उनका जनाज़ा पढ़ाऊंगा, इन्शा अल्लाह।

इमाम मुहम्मद बेलो साहब, जो सूडान के थे, पिछले दिनों फ़ौत हो गए। **إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ।** इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

सूडान की जमाअत के सदर ने उनके बारे में लिखा है कि उनकी बैअत का वाकिया यह है कि 1966 में नाइजेरिया से एक अहमदी इमाम ईसा अब्दुल्ला बिन लील साहब उनके यहाँ मेहमान बनकर आए और बस्ती वालों को तब्लीग़ (प्रचार) की। मरहूम इमाम मुहम्मद बिन बेलो को सबसे पहले बैअत करने की तौफीक़ मिली। उन दिनों में खलीफा-ए-वक्त या मरकज़ से सूडान का संपर्क मुमकिन न था, फिर भी ये अहमदी दोस्तों अहमदियत पर पक्के ईमान के साथ क़ायम रहे। उन्हें कड़ी मुखालिफत (विपक्ष) का सामना करना पड़ा। इमाम मुहम्मद बेलो साहब अहमदियों को नमाज़ पढ़ाते थे। वहां पर अहमदी मस्जिद घास-फूस और तिनके से बनी एक झोंपड़ी थी, जिसे गैर अहमदियों ने नज़र आग लगा दी, आग लगा दी और अहमदियों को गाँव से निकाल दिया। इसके बाद ये अहमदी दक्षिण की तरफ़ हिजरत (प्रवासन) कर गए। वहां भी उन्होंने घास-फूस और तिनके की एक छोटी सी मस्जिद बना ली। वहां भी मुखालिफ़त हुई और मुखालेफ़ीन ने अहमदियों की मस्जिद को जला दिया और अहमदियों को वहां से निकाल दिया। उन अहमदियों का एक ग्रुप वहां से कहीं दूर चला गया और जो दूसरा था वह डुइम शहर चला गया। उनमें इमाम बेलो भी थे। वहां ये लोग अब्दुल्ला बिन अवज़ कासिम साहब के यहां मेहमान बने, जो जामिअ बख़्त अल् रज़ा के प्रिंसिपल थे, परंतु उनके परिवार ने मुखालिफत की और उन अहमदियों को वहां से निकाल दिया। वहां से भी बेचारों को निकाला गया।

आखिरकार उन्होंने नाइजेरिया में इमाम ईसा अब्दुल्ला बिन लील साहब के पास जाने का फ़ैसला किया, जिनके ज़रिए ये लोग अहमदी हुए थे। चूंकि उन गरीब अहमदियों का यह काफ़िला, बीवी-बच्चों के साथ गधे और जानवरों पर सवार होकर और अधिकतर पैदल नाइजेरिया के लिए रवाना हुआ। उनके पास कोई ज़ाद-ए-राह (सफर का सामान) नहीं था। वीज़ा के कागज़ात आदि भी नहीं थे। सफर की मुश्किलात बहुत थीं। हाँ, ईमान की दौलत सिर्फ़ उनके पास थी। ईमान उन्होंने अपना संभाल कर रखा और इसी जोश और जज़्बे के साथ ये हिजरत करते रहे और कभी अपने दीन को क़ुर्बान नहीं किया। आखिर ये नाइजेरिया पहुंचे और वहां इमाम ईसा बिन लील साहब के पास तेरह साल तक रहे। इसके बाद इमाम ईसा साहब ने एक ख़्वाब की बुनियाद पर उन्हें वापस सूडान जाने का मशवरा दिया। यह बात उन्हें अच्छी न लगी तो इमाम ईसा ने उनसे कहा कि यह हमारे रब की तरफ़ से हुक्म हुआ है। इस पर वे बेशक वापस सूडान जाने पर राज़ी हो गए। इमाम ईसा साहब को ख़्वाब में बताया गया था कि ये लोग तीन साल के बाद वापस सूडान चले जाएंगे। तीन साल पूरे होने पर ये अहमदी मुहाजिर वापस अपने वतन के लिए निकले। सबसे पहले इमाम मुहम्मद बेलो वापस गए। सूडान में ये लोग अपने पहले गाँव कुनेज़ा जाकर क़ायम हुए। यह 2010 की बात है। इन अहमदियों की सूडान वापसी के बाद नाइजेरिया में बोकू हराम नामी तंज़ीम (संस्था) ज़ाहिर हुई। अगर ये सूडानी अहमदी उस वक़्त नाइजेरिया में होते तो ख़ुदा जाने यह तंज़ीम उनके साथ क्या सलूक़ करती। उस वक़्त उन्हें समझ आया कि नाइजेरिया से उनकी वापसी में क्या इलाही हिकमत (ईश्वरीय ज्ञान) मौजूद थी। हालांकि कुनेज़ा वापस आने पर उन्हें फिर कड़ी मुखालिफत का सामना करना पड़ा। फिर उनकी मस्जिद जला दी गई, जो उन्होंने छोटी सी बनाई थी। उनके घरों पर हमले हुए। उनके ख़िलाफ़ मुकदमे दायर हुए। उन्हें बस्ती से फिर निकाल दिया गया। फिर आख़िरकार मौजूदा जंग शुरू हो गई, जिससे सूडान के पूरे मुल्क के हालात खराब हो गए और कोई भी वहां सुरक्षित नहीं रहा।

ये अहमदी भी अपनी जान बचाने के लिए और अमन (शांति) के लिए सूडान के विभिन्न इलाकों में बिखर गए और इस वक़्त भी विभिन्न जगहों पर ये लोग बड़ी तंगी और गरीबी की ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। अल्लाह तआला स्वर्गीय के मदारिज़ (ऊंचे स्थान) को ऊँचा करे, माफ़ करने का सलूक़ फ़रमाए और बाकी अहमदियों के ईमानों को मज़बूत रखे।

अल्लाह तआला उनके हालात भी बदले और देश में जैसा कि मैंने कहा, बड़ा फसाद (अराजकता) फैला हुआ है, अल्लाह तआला इस फसाद को भी खत्म करे और अल्लाह तआला उन लोगों पर रहम फ़रमाए। एक-दूसरे के हक़ अदा करने वाले हों।

मुसलमान मुसलमान के भाई होने का हक़ अदा करने वाले हों और इस्लामी हुकूमतों में जो फसाद हैं, अल्लाह तआला उन्हें दूर फ़रमाए और अहमदियों को सही मायने में अमन और सुकून की ज़िंदगी गुज़ारने की तौफीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad